इंद्रधनुषी अकास

इंद्रधनुषी अकास

जगदीश प्रसाद मण्डल



श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। काँपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉडिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरूत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-४६-४

दाम : २००

पहिल संस्करण : २०१३

सर्वाधिकार © श्री जगदीश प्रसाद मण्डल

गाम- बेरमा, तमुरिया, जिला- मधुबनी

(बिहार) ८४७४१०

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.

दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७

Website : http://www.shruti-publication.com

e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२

अक्षर-संयोजक: श्री उमेश मण्डल

डिस्ट्रिब्यूटर:

पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल),

मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

INDRADHANUSHI AAKAS *: Anthology of Maithili Poems by Sh. Jagdish Prasad Mandal*



परिचए-पात : जगदीश प्रसाद मण्डल

जन्म : ५ जुलाइ १९४७ ई.मे

पिताक नाओं : स्व. दल्लू मण्डल।

माताक नाओं : स्व. मकोबती देवी।

पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी।

पुत्र : सुरेश मण्डल, उमेश मण्डल, मिथिलेश मण्डल।

मातृक : मनसारा, भाया- घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा।

मूलगाम : बेरमा, भाया- तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन- ८४७४१०

मोबाइल : ०९९३१६५४७४२, ०९५७०९३८६११, ०९९३१७०६५३१

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र) मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर साहित्यमे मनुखक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि।

सम्मान : गामक जिनगी लघुकथा संग्रह लेल विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११क मूल पुरस्कार आ टैगोर साहित्य सम्मान २०११; तथा समग्र योगदान लेल वैदेही सम्मान- २०१२; एवं बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह "तरेगन" लेल "बाल साहित्य विदेह सम्मान" २०१२ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कार रूपेँ प्रसिद्ध) प्राप्त।

साहित्यिक कृति :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल (२००९), (२) उत्थान-पतन (२००९), (३) जिनगीक जीत (२००९), (४) जीवन-मरण (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (५) जीवन संघर्ष (पहिल संस्करण २०१० आ दोसर २०१३), (६) नै धाड़ैए (२०१३ ई.मे) प्रकाशित। (७) सधबा-विधवा, (८) बड़की बहिन तथा (९) भादवक आठ अन्हार शीघ्र प्रकाश्य।

नाटक : (१) मिथिलाक बेटी (२००९), (२) कम्प्रोमाइज (२०१३), (३) झमेलिया बिआह (२०१३), (४) रत्नाकर डकैत (२०१३), (५) स्वयंवर (२०१३ ई.मे) प्रकाशित।

लघु कथा संग्रह : (१) गामक जिनगी (२००९), (२) अर्द्धांगिनी (२०१३), (३) सतभैंया पोखरि (२०१३), (४) उलबा चाउर (२०१३), (५) भकमोड़ (२०१३ ई.मे)

विहनि कथा संग्रह : (१) तरेगन (बाल-प्रेरक विहनि कथा संग्रह। पहिल संस्करण-२०१० तथा दोसर २०१३), (२) बजन्ता-बुझन्ता (२०१३ ई.मे)

एकांकी संग्रह : (१) पंचवटी (२०१३ ई.मे)

दीर्घ कथा संग्रह : (१) शंभुदास (२०१३ ई.मे)

कविता संग्रह : (१) इंद्रधनुषी अकास (२०१३), (२) राति-दिन (२०१३), (३) सतबेध (२०१३ ई.मे)

गीत संग्रह : (१) गीतांजलि (२०१३), (२) तीन जेठ एगारहम माघ (२०१३), (३) सरिता (२०१३), (४) सुखाएल पोखरिक जाइठ (२०१३ ई.मे)

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक ढेरपर बैसल
फुलवाड़ी लगौनिहार
एवं
नव विहान अननिहारकेँ
समरपित...

आमुख

हम मानव विज्ञान एवं कलाक शोधमे संलग्न शोधकर्मी छी। शोधकर्मीक भाषा बहुत सामान्य, technical, आ रसहीन होइ छै। रसहीन विधामे संलग्न शोधकर्मी साहित्य तहूमे कविता आ छंदपर भला की लिखि सकैत अछि? उपमा, अलंकार, सौन्दर्य, स्वप्न आदि हमरा सनहक शोधकर्मीक हेतु बाहरी परिवेशक वस्तु थिक। फेर हमर की उपयोगिता ऐ रचना केर सन्दर्भमे?

हलाकि साहित्य, मानव विज्ञान आ समाज विज्ञानमे गहन सम्बन्ध छै। साहित्यक मूल्यांकन मानव विज्ञानक दृष्टिकोणसँ होबाक चाही। पश्चिमी संसारमे ऐ तरहक परम्पराक प्रारंभ बहुत पहिनेसँ भऽ चुकल छै मुदा भारतीय साहित्य संसारमे विशेष रूपसँ मैथिलीक मध्य ऐ तरहक प्रयोग कम छै। साहित्य अकादमी तकमे ऐ तरहक यथार्थपर धियान नै देल गेल अछि। साहित्य अगर समाजक स्थितिक दर्पण नै भेल तँ केहेन साहित्य? कथा, कविता, उपन्यास अथवा कोनो रचनाकेँ समाजक कसौटीपर सही उतरबाक चाही। एकर मूल्यांकन के करत? निश्चित रूपे समाजक अध्यनमे संलग्न शोधार्थी। साहित्यक विद्यार्थी नहियोँ होइत हम समाजक अध्ययन करैबाला शोधार्थी तँ छीहे। छी हम घोर आशावादी आ पॉजीटीव। साइत अपन अही पॉजिटीव सोच आ दृष्टिकोणक कारणे हम परमादरनीय जगदीश प्रसाद मण्डल केर कविता संग्रह इंद्रधनुषी अकास केर आमुख लिखबाक जिम्मा लऽ लेलौं। मण्डलजी विचारसँ प्रगतिशील आ सभ तरहक लोक-विचारधारा, परिस्थिति आ परिवेशमे सामंजस्य स्थापित करएबला साहित्यकार छथि। अल्टरनेटिव डेवलपमेन्ट आ इकोलॉजिकल कन्सेप्टकेँ स्थानीयताक दृष्टिकोणमे बुझबाक आ अपन ज्ञान गंगाकेँ कथा, उपन्यास, नाटक एवं कविताक रूपमे बहेबाक असाधारण क्षमता छन्हि मण्डलजीमे। हिनकर रचना पढ़ैत जाऊ आ ब्यौंत-पर-ब्यौंत सुनैत जाऊ! हिनकर बात आ ब्यौंत सभ सहज, चमत्कारी मुदा विश्वसनीय

लागत।

मण्डलजीमे सामाजिक क्रांति लेबाक असाधारण क्षमता छन्हि। ई चाहथि तँ समाजक विभिन्न वर्गक बीच भयंकर उन्माद कखनो उत्पन्न कऽ देथि। लोक आपसमे मरए कटए लगत। जाति आ वर्गक राजनीतिमे तल्लीन भऽ जाथि। मुदा हिनक विशेषता ई अछि जे ई कहिओ बदलाक भावनासँ कार्य नै करै छथि। हिनकर क्रांति मिथिला भूमिमे सभ वर्ग आ सभ लोकक मध्य आपसी विचारक, मेल मिलापक क्रांति थिक। हिनकर क्रांति खाँटी शब्दक चयन आ ओकर प्रयोग करबाक क्रांति थिक। हिनकर क्रांति लगातार ४० वर्षक अनुभवकेँ निश्चिंतसँ व्यक्त करबाक क्रांति थिक। हिनकर क्रांति एकरंगी नुआ नै अपितु बहुरंगी चुनरी थिक। मण्डलजी शोषण केर चर्चा तँ अवश्य करै छथि मुदा शोषित आ शोषक अथवा शोषित केर संतान आ शोषक केर संतानक बीच घृणाक वातावरण उतपन्न नै करै छथि। मण्डलजी इतिहाससँ सबक लइ छथि इतिहासक घावपर नोन नै छिड़कै छथि। ई इतिहासक सन्दर्भ लऽ लोककेँ वर्त्तमानमे जीबाक प्रेरणा दइ छथि। सामाजिक दृष्टिकोणसँ ई बड्ड महत्वपूर्ण बिंदु अछि। ऐ तरहक बात कोनो साहित्यकारकेँ कालजइ बना दइ छै। मण्डलजी मिथिलाक एवं मैथिलीक एक मानवीय धरोहर छथि- लिविंग human Intangible Heritage.

मण्डलजी कोनो अड्डाबाजी अथवा गुटबाजीमे विश्वास नै करै छथि। राजनीति छोड़ि देलनि तँ छोड़ि देलनि। आब खाँटी रचनाकार थिकाह। रचनाक अलाबे किछु नै करै छथि। केवल हिनकर शब्द आ बिम्बपर बहुत किछु लिखल जा सकैत अछि। ओकर मानवीय मूल्य एवं आदर्शक महत्व लिखल जा सकैत अछि। हुनक जीवन शैली आ जिनगीक उतार-चढ़ावपर लीखल जा सकैत अछि। हिनकासँ पुरस्कार सम्मानित हएत; पुरस्कारसँ ई की सम्मानित हेता? ई बात हम बिना कोनो पूर्वाग्रहक लिखि रहल छी।

आब बात करी रचनापर। हिनक रचना ''इंद्रधनुषी अकास'' सरिपहुँ कविताक प्रकार, छोट-पैघक हिसाबे, भावनाक प्रवाहक हिसाबे,

अनेक विषयमे होबाक कारणे बहुरंगी चुनरी अछि। अतेक विस्तृत विधा आ विषयकेँ समेटबाक कारणे ऐ संकलनक नामकरण ऐसँ उत्तम नै भऽ सकैत अछि : वैविघ्यसँ भरल, मनोरंजक, रंगारंग, दीवास्वप्न, सोहनगर-मनोरंजक आ मनोहारी अकास। ऐमे जीवनक यर्थाथ अछि, कविक कल्पनाक संसार अछि, उपमा आ अलंकार अछि, जीवनक दर्शन अछि, माटिसँ सिनेहक उद्‌गार अछि, गीत अछि, भाव अछि, अर्थ विन्यास अछि, प्रेमक अनुभवजन्य परिभाषा आ प्रवाह अछि, प्रकृतिक अनुराग अछि, ग्राम्य-जीवनक झांकी अछि चीर प्राचीन आ चीर नवीन विचार अछि।

“इंद्रधनुषी अकास” नामसँ अपन लिखल एकटा छोट कविता स्मरण अबैत अछि, आ स्मरण अबैत अछि ओ परिस्थित जइसँ प्रेरित भऽ पाँच वर्ष पहिने इंद्रधनुषपर एक छोट कविताक निर्माण केने रही। परिस्थिति ई छल जे हमर पाँच वर्षीय पुत्र शषांक हमरासँ जिद्द करए लागल जे 'हमरा इंद्रधनुष देखाउ।' मुदा देखाऊ कोना! घोर समस्या। किछु काल सोचमे पड़ि गेलौं। अन्तत: कम्प्यूटर खोलि इन्टरनेट चालू कऽ ओकरा इंद्रधनुषक अनेको फोटो देखा देलिऐक। शषांकक बालशुलभ मोन प्रसन्न भऽ गेलै। रातिमे सुतबासँ पहिने मोनमे आएल जे ऐपर किछु लीखी। पेन आ कागत लऽ लिखैले बैस गेलौं। सोचल कविता लिखल जाए। कविताक शीर्षक सेहो फुरा गेल- 'इंद्रधनुषक विन्यास' कविता स्वत: प्रारम्भ भऽ गेल-

“सुरुजक इजोतसँ भरल आकास दग्ध केतेक अछि
गर्मीक धाहसँ मोन विदग्ध केतेक अछि
कोना करी एहि प्रचण्ड गर्मीमे शीतलताक आभाष
कोना करी टहटहाइत इजोतमे इंद्रधनुषक विन्यास?
मुदा हारि मानब हमर प्रकृतिमे केतए अछि
एकाएक बुझाएल जेना इंद्रधनुष अतए अछि।
मोन हरियाएल ब्यौंत फुराएल इंद्रधनुषक निर्माण हेतु
कल्पनाकेँ सकार कय इंद्रधनुषक रचना हेतु

सोचल कोना नै हएत इंद्रधनुषक विन्यास?
टहटहाइत सुरुजदेवकेँ ऊपर आँजूरसँ पोखरिक पानि छीटि,
सुखाएल धरतीकेँ हरिअर करबाक हेतु कऽ लेब एकटा
छोट मुदा यथार्थक इंद्रधनुषक विन्यास।
फेर की सभ भऽ जाएत सोहनगर,
की धरती आकि अकास।''

आब बिना इम्हर-ओम्हर भटकने जगदीश प्रसाद मण्डल जीक कविता संग्रहकेँ देखी।

९५ कविताक ई पोथी मैथिली साहित्य केर एकटा अविस्मरणीय धरोहर अछि। हरेक छोट आ पैघ कवितामे किछु संदेश, किछु संस्कार आ किछु नव विचार प्रस्फुटित होइ छै।

लोक मिथिलासँ बाहर पलायन करै छथि तँ मण्डलजीकेँ कचोट होइ छन्हि। मुदा जखनि लोक मिथिलासँ साफे रिश्ता समाप्त कऽ आनठाम बैस जाइ छथि तँ मण्डल जीक हृदए जेना भोकासि पाड़ि-पाड़ि कानए लगै छन्हि। ऐ बातक सहज अनुभूति उड़ियाएल चिड़ैमे परिलक्षित होइत अछि-

''उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोख घोघ भरतै जतऽ
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसरि जाएत डीहो-डावर।''

देखू! देस परदेस केतौ जाऊ मुदा अपन माटि आ अपन संस्कृतिसँ अपनाकेँ बिमुख नै करू। साइत यएह बात थिक ऐ कविताक मूल। अगर आँखि मूनि पलायन करैत रहब आ अवसर एवं सफलता मात्र पेबाक कारणे अपन डीह-डावर सदाक लेल तियागि लेब तँ भला अहाँ केहेन मनुक्ख! अहाँक केहेन संस्कार? छोट कविताक माध्यमसँ

केतेक पैघ आ मर्मक बात बजैत अछि जगदीश प्रसाद मण्डल केर कवि मोन! समाजशास्त्रक push आ pull factor अतए स्वत: आबि जाइत अछि।

एक आर कविता- ‘‘चल रे जीवन’’ अहाँकेँ रोकि लेत। कविता पढ़ु, ओकर शब्दक युग्मकेँ देखू आ कविताक संग अपने-आपकेँ गतिमान बना लीअ। ने कविता रूकत आ ने अहाँ। कविता पढ़ैत जाऊ कल्पना संसारक दुनियामे घुमैत जाऊ। अलंकारसँ मतभिन्नता भऽ सकैत अछि मुदा कविताक प्रवाहमे तँ प्रवाहित भइए टा जाएब। वाह रे वाह! एहेन आसाधारन सम्बन्ध कविता आ पाठकक बीच! जीवन गतिशील थिक। ई बात अनेको कवि अनेको भाषा आ कालमे अपना-अपना ढंगसँ कविताक माध्यमे कहने छथि। मुदा अही बातकेँ सर्वहाराक शब्दावलीसँ कहब। कहब की चलैत पहियापर एना बैसाएब कि पाठककेँ जोश आबि जाइक। ई कला मण्डल जीमे छन्हि। कविताक किछु अंश देखू-

‘‘किछु दैतो चल किछु लैतो चल
किछु कहितो चल किछु सुनितो चल
किछु समेटतो चल किछु बटितो चल
किछु रखितो चल किछु फेकितो चल
बिचो-बीच तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।
समए संग चल
ऋृतु संग चल
गति संग चल
मति संग चल।
गति-मति संग चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।’’

हँ, कवि केवल गतिमान होमाक प्रेरणा टा नै दइ छथि। ओ कहै छथि जे जोश संगे होशमे रहू : गति संग चल/ मति संग चल/ गति-मति

संग चलिते चल।

'सासु-पुतोहु वार्ता' कवितामे जेनरेशन गैप आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेटत। जखनि कविता पढ़ब तँ लागत मनोरंजक अछि। जखनि सोचब तँ लागत एकटा अनुभवजन्य विश्लेषण अछि। एक-एक शब्दक चयन कविताकेँ समाजसँ सीधे जोड़बामे प्रभावकारी अछि। ई कविता ऐ बातक साक्षी अछि जे मण्डलजीमे कथाक पात्रक अंतःकरणमे घुसबाक विलक्षण प्रतिभा छन्हि। स्त्रीगणक जखनि बात करै छथि तँ स्त्री, पुरुषक बात करए काल पुरुष; सासुक काल सासु आ पुतोहुक चारचाक क्षण पुतोहु। ओहने शब्दवाली, ओहने परिवेश, ओहने कविताक प्लाट।

''अपनेपर हँसै छी'' शिक्षाक घटैत स्तर, परीक्षामे नकल अथवा चोरि, घूस दऽ नोकरी प्राप्त करबाक तरीका, अवसरवादी नेता लोकनिक पॉपुलिज्म आ शिक्षा मित्र इत्यादि केर माध्यमसँ किछु पाइ मासिक भत्तामे राखब, ओइले मुखियासँ नेता आ अधिकारी धरि घूसक प्रचलन आदि प्रथापर सोझे-सोझ प्रहार अछि। भयमुक्त भेने सहजतासँ जनताक भाषामे जनताक समस्याक विवरण कवितामे करबाक साहस केलनि अछि मण्डलजी। जेकरा फबलै से बिना पढ़ने नकल कऽ परीक्षा पास कऽ डिग्री हासिल कऽ कोहुना लाख-डेढ़ लाख टकाक ब्यौंत कऽ नोकरी हथिया लेलक। भाँरमे जाउ शिक्षा बेवस्था या चौपट्ट होथु विद्यार्थी! शिक्षामित्र लोकनिकेँ ऐसँ की मतलब???

''बाट'' कविता कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कविता यदि तोर डाक शुने केऊ न आसे/ तबे एकला चलो रे/ केर स्मरण करबैत अछि। संगहि-संग गीताक मूल मंत्र ''कर्मण्येवाधिकारस्ते माँ फलेषु कदाचन'' अर्थात अहाँक अधिकार कर्म तक सीमित अछि। तँए अहाँ कर्म करैत जाऊ, फलक इच्छा नै करू... केर सेहो पुनर्स्थापित करए चाहै छथि।

कवि भावुक सेहो छथि। होबाको चाही। भावुक नै भेल तँ कविताक कोना रचना करत कवि! कविक भावुक मोन गीतमे बहय लगै छै। ''गीत-२'' मे किछु एहने दशाक वर्णन थिक। भावनासँ द्रवित मोन बाजत तँ कोना? बोल कन्ना फुटतै?

‘‘मुहसँ बोल कन्ना कऽ फुटतै
दरदसँ दुखाइ छै
टीससँ टिसकै छै छाती
लहि-लहि लटुआएल छै
मुहसँ बोल कन्ना...।
आशाक सभ मेटेलै
बाटे सभ घेराएल छै
केकरो कहने किछु ने भेटत
अपने बेथे बेथाएल छै
मुहसँ बोल कन्ना...
चोटसँ चोटाएल छै मन
ढहि-ढहि कऽ ढनमनाइ छै
तैयो हँसि-हँसि नाचय गाबए
राति-दिन बड़बड़ाइ छै
मुहसँ बोल कन्ना...।’’

अही तरहेँ जाल आ गालक उपमा लऽ कवि लोककेँ अगाह करै छथि : जहिना जाल सभ तरहक माँछकेँ पकड़ैत अछि, परन्तु अगर मल्लाह जालकेँ ठीकसँ नै ओछेलक आ काबूमे नै केलक तँ जाल फाटि जाइ छै, माँछ भागिओ जाइ छै। तहिना मनुष्यकेँ अपन बोलीपर संयम करक चाही-

‘‘शब्दजाल छी महाजाल
जइमे समटल महाकाल
देखैमे जहिना विकराल
तहिना अछिओ महाकाल।
सभ किछु भेटत आँखिएमे
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

जे जेहेन अछि जलवाह
से तेहेन फेक फेकैए।
गैंची ने गैंचिया जाइए
रोहु, भाकुर तँ फँसिते-ए।
सभ किछु भेटत जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
गाल बजबैमे जे जेहेन
से तेहेन जाल फेकैए।
इचना-कोतरीकेँ के कहए
डोका-काँकोर धरि फँसैए।
सभ किछु छै गालेमे
सभ फँसल अछि जालेमे...।''

जाल कविता छायावाद आ याथार्थवादक बीचक कविता अछि। जालक अनेक यंत्र तथा जालसँ माँछ मारबाक प्रक्रियाकेँ मूल मानि एक देसी कविताक विन्यास करबाक अनुपम क्षमता कविमे छन्हि।

विचार तँ विस्तारपूर्वक अनेको कवितापर लिखल जा सकैत अछि। हिनकर ई कविता संग्रह हाथक आंगुर जकाँ थिक। सभ आंगुर स्वतंत्र अछि, मुदा सभ जुड़ल अछि तरहत्थीसँ। तहिना हिनकर रचना ''इंद्रधनुषी अकास'' नामक मालामे गांथल पनचानबे गोट कविता स्वतंत्र अछि- विषय, भाव, शब्द चयन, प्रेम, उपमा आदिक स्वभावसँ परन्तु अन्तत: सभ कविता एक तागसँ गांथल अछि ओ ताग थिक जगदीश प्रसाद मण्डलक व्यक्तित्व आ दृष्टिकोण।

सभ कविता एक-सँ-बढ़ि कऽ एक अछि। ''माटिक फूल, गोधन पूजा, झगड़ा, नजरि, भभूत, पुरुषार्थ, अगहन, केना मेटत गरीबी, बाढ़िक सनेस, बेरोजगारी, पू-भर, बेथा, एकैसम शदीक देश, अपनेपर हँसै छी, धोबि घाट, सात्विक भाव, पपीहाक गीत, विषधरक बीख, महजाल, नव दुनियाँ, रहसा चौर, जरनबिछनी, भुताहि गाछी, मधुमाछी'' इत्यादि किछु एहेन कविता अछि जेकरा पाठक बेर-बेर पढ़ता।

मैथिली कविता संसारमे ऐ अनुपम धरोहरकँ स्वागत अछि। पाठक जँ कविताकँ मिथिलाक परिवेशमे बिना कोनो पूर्वाग्रहसँ अध्ययन करथि तँ ऐ कविताक सरोवरमे जेतेक डुमकी लगेता तेतेक नवीनता आ स्फूर्ति प्राप्त करता। ऐमे कोनो संदेह नै।

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र
अड़ेर डीह टोल, मधुबनी

अनुक्रम

मन-मणि

मढ़ि-मढ़ि मणि मनकेँ
प्रज्वलित करू तनकेँ
धुआ-काया पकड़ि-पकड़ि
दिव्यभूमिक चिन्हू धनकेँ।
जखने मन मणि बनत
छिटकत ज्योति धरतीपर।
अपन बाट अपने देखब
हँसैत चलब पृथ्वीपर।

कानि-कानि दुख मेटबए सभ
नाचि-नाचि नचारी गबैए।
आर्त स्वर गाबि आरती
अपन-अपन बेथा सुनबैए।
छी अमूल्य मानव तन
चिन्ह बिना औषधि भारी।
चेतू-चेतू आबो चेतू
कहै छी अपने भैयारी।
श्रेष्ठ जीव मानव कहबै छै
मानवता उदेश्य जेकर।
मनुख-मनुखक भेद-विभेद
मेटबैक छी धर्म ओकर।



चल रे जीवन

चल रे जीवन चलिते चल।
संगी बनि तूँ संगे चल
जौवन चल जुआनी चल
जिनगानी संग मर्दगानी चल
चिंतन संग दिलेरी चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

यात्रीकेँ आराम कहाँ छै
यात्रा पथ विश्राम कहाँ छै।
ओर-छोर बिनु जहिना जिनगी
तहिना ई दुनियोँ पसरल छै।
पकड़ि मन तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

ग्रह नक्षत्र सभटा चलै छै
सूर्ज तरेगन सेहो चलै छै
दोहरी बाट पकड़ि चान
अन्हार-इजोतक बीच चलै छै।
देखा-देखी चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

बाटे-बाट छिड़ियाएल सुख छै
संगे-संग बिटियाएल दुख छै।
काँट-कुश लहलहा-लहलहा
गंगा-यमुना धार बहै छै।

परखि-परखि तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

किछु दैतो चल किछु लैतो चल
किछु कहितो चल किछु सुनितो चल
किछु समेटितो चल किछु बटितो चल
किछु रखितो चल किछु फेकितो चल
बिचो-बीच तूँ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

समए संग चल
ऋृतु संग चल
गति संग चल
मति संग चल।
गति-मति संग चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

गतिए संग लक्ष्मी चलै छै
सरस्वती मतिए चलै छै।
विश्वासक संग अशो चलै छै
तही बीच जिनगीओ चलै छै।
साहससँ संतोष साटि-साटि
धीरज धारण करिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।

टूटए ने कहियो सुर-ताल
हुए ने कहियो जिनगी बेहाल।
जहिए समटल जिनगी चलतै

बनतै ने कहियो समए काल।
बूझि देखि तूँ चलिते चल
चल रे जीवन चलिते चल।
की लऽ कऽ आएल एतए,
की लऽ कऽ जाइत अछि?
सभ किछु एतए छोड़ि-छाड़ि
जस-अजस लऽ पड़ाइत अछि।
निखरि-निखिर कऽ चलिते चल।
चल रे जीवन चलिते चल।



धोब घाट

धोब घाट जाबे नै जाएब
मलि झाड़ि चिक्कन नै हएब?
देह मनक काह-कूह
छोड़ि ओकरा केना पएब।
थाल-कीच जहिना जनमि
कुआर-कमल कहबैए।
तहिना काह-कूह बीच
मन बुझ्ध सिरजैए।

धोइब घाट ओ घाट छी
पाप धुआ पुन बनैत रहैत।
अज्ञान-ज्ञान राति-दिन
रगड़ि सान चढ़बैत रहैत।
बदलि अन्हार इजोतमे
छोड़ि राति दिने कहबैत।
जेकरे दिन तेकरे छी राति
लोक-वेद स्वर तानि कहैत।
बारह-घंटाक बँटबारा फूसि
जेठक दिन राति कहैए।

उला-पका रातिकेँ
साले-साल सुर्ज सुड़कैए।
सुख-आरामक पहर छीनि
हँसि-हँसि राति-दिन झाड़ैए।
धरतीसँ सिर उठिते अकास

सोर बनि पकड़ए बात पताल।
ऊपर धरती पसरि अकास
तहिना धरती तर धरती सजाएल।
सात तल जहिना अकास
तहिना धरतीओ धेने अछि।
ऊपरसँ जहिना अकास
तहिना धरतीओ रखने अछि।
बढ़ैत वृक्ष जहिना अकास
सोर बनि सिरो ससरैए
वृक्ष सिर्फ ऊपर बढ़ैए
सोर ससरि दू बाट धड़ैए।
एक बाट ससरि पताल
दोसर अकास बाट धड़ैए।
जहिना बाँसक ऊपर-निच्चाँ
गिरह-गिरहमे सीर निकलैए।
अद्भुत खेल विधातोक छन्हि
दिन-राति रंगमंच बदलैए।
लगले ससरि सिर
गिरहसँ डारि-डारि पकड़ैए
बर्ड़ू, बरहा बनि-बनि
लटकि डारि धरती पकड़ैए।
फुसिया, पनिया पोलहा-पोलहा
पएर पसाड़ैए रती-रती।
आँखि-मिचौनी खेल पसारि
नाचि-नाचि सिर पसरैए।
करौटन नाओं धड़ा-धड़ा
फूलक घर आबि बसैए।
तँए कि खेल खतम भेल

कुदि-कुदि दिन राति नचैए।
पातसँ मुड़ी पकड़ि
तरे-तर सेहो ससरैए।
जहिना डारि करौटन, लीची
खोधिते खोंइचा पकड़ैए।
नीचाँ-ऊपर ससरि-ससरि
अपन-अपन बाट पबैए।



सासु-पुतोहु वार्ता

ओसार पूबरिया बैस सासु
पड़ल पुतोहुकँ देल धाही।
अकड़ि कऽ मकड़ि बाजलि
देहक पानि लऽ गेलह हाही।

घर पछबरिया पुतोहु पकड़लनि
धाहीक छिटकल ओर।
लुक्खी सदृश ओर पकड़ि
कसि कऽ धेलनि छोर।
पनिए तँ पसरि देहमे
पीबि गेल सभटा पानि।
की करब, फुरिते कहाँ अछि
कहाँ पड़ल छी जानि।
उठितो-बैसतो असकताइ छी
तैयो, ससरि-ससरि सड़कै छी।
जाबे ई जीबै छथिन
छाहरिमे छिछिआइ छी।

खेल खेल खेला-खेला
खेलाएल खेलड़ी खेल खेलबह।
तहिएसँ खेल जिनगी
खेल-खेलाड़ी संग रहतह।
वामा-दहिना केम्हरो तकबह
ढंस हेतह सभ भेलहो-भेल।
लास जकाँ लसिया-लसिया

विश्राम-बाट चढ़ैत जेबह।
अबिते ओहन दिन देखि
केलहा अपन मन पड़तह।
सुमरि-सुमरि सुमारक
पाथर-छाती रखबह।

हिनके धाही पकड़ि-पकड़ि
धाह-बोखार लगबै छी।
अलिसा-अलिसा ओछाइन
बेमरयाह कहबै छी।

हमरे सोझहा झूठ बजै छह
किअए कहतह कियो बेमरयाह
अपन मन जेहेन मानह
सएह बनि-बनि रहिह।
तैयो फेर कहै छिअह
पुतोहुक सुख आब जनलौं।
पूर्बेक उधियाएल पछिमो दिस
पुतोहु-सासु सेहो बुझलौं।

बेस कहै छथि, बेस कहै छथि
बेटा-बेटी भेद केतए?
एक बेटी जाएत घरसँ
दोसर तँ लगले अबैत।
एकमे गुरुआइ केलनि
दोसर हुकुम चढौलनि।
रंग-रंगक शब्द बदलि
छातीकँ धमकौलनि।

करब निचेन गप कहियो
नै तँ आजुक काज हूसत।
गपे-गप ससरि-ससरि
रोग-वियाधि सेहो पकड़त।

❍

बौड़ाएल बटोही

जहिना कोबर कनियाँ-नुकाइत
तहिना बाटो नुकाएल छै।
अछैते घरमे रहितो रहैत
नजरिसँ कतियाएल छै।
चुटकी बजा जेना कनियाँ
तहिना धकचुकबए बाटो बटोही।
आँखिक सोझ रहितो रहैत
पाबए ने थाह राही-बटोही।
दिन-राति चलितो-चलैत
देखए ने कखनो खुजैत कपाट।
पट्टामे पट्टा सटि-सटि
सदिखन बन्न रहैत दुआरि।
आठो पहर दिन-राति घुमै छै
देखि ने पबैत पड़ाएल पथिक।
कखनि केम्हर घुसैक-फुसैक
पाबि ने पाबए पथ पथिक।

बन्न आकि खुजल केवाड़
नुकाएल नजरि नै ताकि पबैत।
संगे-संग चलितो चलैत
ठेल-ठेल सदिखन कतियबैत।
बिनु देखल अनभुआर कहबैए
देखिनिहार कहबै छै भू-आर।
अनुभुआर भुआर बीच
सदएसँ होइत आएल करार।

अपन-अपन सभ लूरिए-बुधिए
जनम लैत धरतीपर।
माए-बापक पुन-परसोदे
पबैत पथ पृथ्वीपर।
अद्भुत खेल खेलैए दुनियाँ
दुनियोक भरमार छै।
जेहने खेल खेलेनिहार खेलाड़ी
हारि-जीत पड़ाइ छै।
ऊपर-निच्चाँ सिर ससरै छै
केतौ निच्चाँ केतौ ऊपर।
होनी-अनहोनी कहि-सुनि
बदलि खसैत धरतीपर।
सात तल जहिना छै ऊपर
तहिना नीच्चोँ निचियाएल छै।
शिखर पहाड़ चढ़ैले
बाटो-घाट ढेरियाएल छै।

बाटे बीच बटोही बनि-बनि
बाटे-बाट बौआइ छै।
हँसैत-खेलैत चलैत
साँझूपहर ठेहियाइ छै।
कियो जाए चाहए सुरलोक
स्वर्गक बास कियो चाहए।
कियो चाहए बैकुण्ठ जाइले
तँ कियो जाहै गौलोक।

बाटे बिला बुइध

बाटे बिसरि गेल।
जेम्हरे जे चलल
तेम्हरे पहुँच गेल।
छूटि गेल मनोकामना
छूटि गेल कामनाक भूमि
कामनो कमि-कमि
छिछलि गाबए झूमि-झूमि।



अपनेपर हँसै छी

ठक विद्या विद्यालयसँ
नीकहा डिग्री किनलौं।
शिक्षामित्रक उजैहियामे
हमहूँ नोकरी पेलौं।
लाखे रूपैआमे,
दशो कट्ठा जमीन गमेलौं।
गुरुदक्षिना देने बिना
गुरुआइक भार उठेलौं।
दिन-राति गुरुआइ करै छी
मुँह भरल मधुरसँ।
जे निकलत सएह मधुर
सुनैत रहू अस्थिरसँ।
आरो बात सुनबै छी
अपनेपर हँसै छी।

मात्रा घुसका-फुसका
शब्द बनेलौं ठूठ डारि।
अक्षर काटि ईटा बनेलौं
साहूल खसा देलौं डांरि।
तीरछा-तीरछा चेन्ह लगा
कोने कानी लेलौं नाओं।
बाहरे-बाहर सोझ-साझ
उठि-बनि गेलै सौंसे गाओं।
पुरने घरक ईटा जोड़ि-जोड़ि
नवका घर बनबै छी।

अपनेपर हँसै छी।

पुरनाकेँ पुराण कहि-कहि
नवका चालि सिखबैत एलौं।
धर्म सनातन कहि-कहि
अर्थ-जाल फेकैत एलौं।
इचना पोठी छानि-छानि
डेली भरैत एलौं।
गुबदी मारि बिहुँसै छी
मन कनैत, हँसैत तन
कठहँसी हँसि हँसै छी।
अपनेपर हँसै छी।

धन की? केकरा कहबै
धन यौ भाय?
गाए-माए छी एक्के
पूछि लियनु यशोदा माइ।
बिनु धनक धनिक जहिना
ताम-झाम देखबैए।
देखि-देखि आँखि करुआए
लाजे आँखि मुनै छी।
अपनेपर हँसै छी।

हेहरा गाछक फल खा-खा
हेहरपन्नी सिखैत छी।
दिन-राति हहरि-हहरि
निच्चाँ ससरि खसए।
उनटा मुँह आगू घुमा

कल्याण-कल्याण रटैत छी।
क्षणे-क्षण पले-पल
रीत-नीति घटबैत छी।
अपनेपर हँसैत छी।
गालक सितार बना-बना
राग-पुराणक स्वर साधै छी।
राग-तान मिला-मिला
वेद-पुराण गबै छी
अपनेपर हँसै छी।



धोबि घाट

किनछरि धार धोबिघाट बनल छै
बामी-दहिनी बीच पड़ल छै।
ठेहुन पानिसँ भीत्ता महारक
खाढ़ी-खाढ़ी रूप गढ़ल छै।
अपना सीमा रोकि-रोकि घाट
तिरछिया-तिरछिया धारा चलै छै।
जहिना ले-ऊँच घाट मढ़ल
तहिना ले-ऊँच ठाढ़ धोबि छै।
एक ओरीकेँ पकड़ि-पकड़ि
उनटा-उनटा पाट पटकै छै।
रेहे-रेहे सटल मैल
खाढ़-खाढ़ी पटकि झरै छै।

तीन ताल पकड़िते पकड़ि
चिन्ह-पहचिन्ह तीनू करै छै।
दू पाटन बीच पड़ि-पड़ि
रचल-बसल मैल संग छोड़ै छै।
जुग-जुगसँ जकड़ि जकड़ल
पटका-पाबि-पाबि संग छोड़ै छै।
गुड़कि-गुड़कि गहे-गहे
पानिक संग-संग सेहो बहै छै।

सहस्त्रोसँ रचि-रचि बेवस्था
कोने-सान्हिए पकड़ि लेने छै।
उनटा-पुनटा देखि-देखि धोबि

गरे-गर उनटा पटकै छै।
दंगल बीच पहलवान जहिना
लपकि बाँहि पकड़ै छै।
छाती-पीठ सटा फेकै छै
पाट धोबिया सीखै छै।
एक धैर्य टूटि-टूटि दोसर
बालिक शक्ति पबै छै।
सात स्वर बीच जहिना वीणा
आनए पकड़ि महुराएल साँप छै।
अपन मधुर स्वर-लहरीसँ
नंगटे नाच नचबै छै।
परखि देखि देखिते देखिनिहार
अपन दिशा देखै छै।
पबिते अनुकूल दिशा अपन
मधुर-मधुर फल सभ चीखै छै।

समए साक्ष्य शीशा सिरजि
ऐनाक रूप धड़ै छै।
पबिते रूप अपन ऐनामे
समए-संग दौगए लगै छै।



साँझ

जिनगीमे साँझ कहाँ छै
छी दिन-रातिक मिलन बेल।
एक सिरजन दोसर उसरन
बदलब छी मात्र खेल।
अपन गतिए सभ चलै छै
चाहे सुर्ज हो वा ग्रह-नक्षत्र।
तहिना देवो-दानव चलै छै
बनि रक्षक चाहे भक्षक।
चाहे गंगा हो वा जमुना
धार पेट धारण करै छै।
तही मध्य ने सरस्वती
साँझ-प्रभाती सेहो गबै छै।

आलय-हिमालय ओ कैलाश
विश्राम भूमि बनल छै।
बाट-घाट ओ तीर्थ-वर्त
अनवरत बनि पड़ल छै।
सभ दिनसँ आबि रहल
बाल-सियान बदलैत रहल।
उमेरे आकि बाल बोधे
अनिर्णित प्रश्न बनल रहल।
जहिना सोर पाड़ि साँझ कहए
सुतैक इशारा दइए
तहिना ने आँखिसँ
जागैक सुर-पता सेहो भेटए।

घड़ी कहाँ कहियो बुझलक
साँझ-भोरक किरदानी
एके चालिए चलि-चालि
मुस्कुराइत गबए जिनगानी।
बिनु जिनगानीक जिनगी
मनुख ठट्ठर कहबै छै।
जहिना कौआ खएल मकै
खेत ठठेर कहबै छै।

❍

सात्विक भाव

सात्विक भाव उगै ओतए छै
जेतए सात्विक भूमि उर्वर छै।
हवा-पानि जेतए सात्विक छै
तेतए भाव लहलहाइत रहै छै।
जेतए दोसर हवा चलैत हो
मटियाएल पानिक धार बहैत हो
चसगर, चटगर बोल जेतए नित
तेतए केना सात्विक भाव जगैत हो।
रंग-बिरंगक रूप गढ़ि-गढ़ि
रंग-बिरंगक चालि चलैत।
रंग-बिरंगक मंत्रणा दऽ दऽ
शब्द मात्र सात्विक रहैत।
जखने मन कलशैत सात्विक
किछुओ नै कठिन रहि पबैत।
विध्न बाधा रोकि नै पाबए
हँसैत-खेलैत मानव चलैत।
लक्ष्य बना चलए सदैतकाल
संकल्पक संग सात्विक भाव।
दृढ़तासँ सदति डेग बढ़बए
मुरती रूप धड़ए सात्विक भाव।
जे भावे सएह भाव नै
सु-भाव, कु-भाव संगे चलैत।
अपन-अपन गुण पसारि
अपनासँ परिचए करबैत।



दिव्य शक्ति

दिव्य शक्ति पबिते मनुज मन
दिव्य ज्योति बिखड़ैए।
सगतरि एक्के रश्मि बिलहि
दिव्य-भूमि, वसुधा कहबैए।
गंगा सदृश धार जेतए
नीक-अधलाक विचार करैत
सभकेँ पार करैवाली गंगे
अनवरत गतिए वहैत रहैत।
दिव्य भूमि पहुँचते वसुधा
धरा-धम कहबए लगैत।
नै रहैत भेद तेतए मनुजमे
सुर-धामक कपाट खुजैत।
जेतए विराजए वसुदेव
वसुधा वएह कहबैए।
नन्द-नन्दक मंत्र सुमरि
आनन्द वन भरमैए।
पाँचम कला बनि जे बीआ
मनुज मन विरजैए।
डेगे-डेग डगरि-डगरि
सोलहम कला पबैए।



उड़ियाएल चिड़ै

उड़ियाएल चिड़ैक ठेकाने कोन
उड़ि केतए जा बास करत।
भरि पोख घोघ भरतै जतऽ
दिन-राति जा रास करत।
ओहन चिड़ैक आशे कोन
जे बिसरि जाएत डीहो-डावर।
छोड़ि-छाड़ि सभ किछु अपन
रखैत मन खाली स्मृति पूर्वक।

ओहन स्मृति स्मृते की
जे मने-मन घुरिआइत रहैत।
पसरि नै पबैत जे कहियो
तरे-तर खिआइत रहैत।

ताड़ सदृश छुबए अकास
कलसि कहाँ डारि बनबैत।
रसगर फलक चरचे की
सोनाएल-सकताएल फड़ैत।

नढ़िओ-कौआ कहाँ पुछै छै
कहाँ पुछै छै बालो-बोध।

भरिसक सभ बिसरि गेल
छिऐ ओहो कोनो गाछेक फल।
वृक्षक शोभा तखनि बढ़ै छै

फल-फूलसँ जखनि लदै छै।
शीतल-सुन्दर हवा सिरजि
बाट-बटोहीक रच्छा करै छै।

❍

रणभूमि

ओर-छोर बिनु भूमि कुरुक्षेत्रक
एक आबए एक जाए धीर।
साधि-साधि तड़कस सजा
रंग-बिरंगी सधए तीर।

युद्धभूमि संसार केर
भोगिनिहार योद्धा रण-वीर
रसमे डुमल रसिक शिरोमणि
देखए सदिखन भऽ थीर।
ज्ञान-कर्म बीच बसए धर्म
अंगेजि चलए सदति कर्मवीर
जेतए बसी सएह भूमि ने
मातृभूमिक बनैत हीर।
मातृभूमि तँ मातृभूमि छी
सिरजए सदए भऽ गंग।
शिवसिर चढ़ि दुनू गाबए
की गंग की भंग।

मुँह चमकबए ज्ञान सरूपा
दोसर पक्ष कहबए कृष्ण।
तेसर जाल पसारि-पसारि
दु:शासन, अर्जुन बीच कृष्ण ।
तीन तीर बेधने दुनियाँकेँ
दैविक, भौतिक ओ अध्यात्म।
बेरा-बेरा देखि तीनू केर

धर्म-अधर्म बीच महात्म।
तन रोग मन सोग
अनिवार्य खेल जिनगी केर
डटए पड़त दुनूसँ
मक्खन-सँ-मिश्री लेल।
दैवी दाह तँ चलिते रहत
की राति की दिन।
तइ संग चारू कात नाचए
खीच बाँहि लेत छीन।

सम दृष्टिक हथियार तेज
जे देखए तइले।
दूधो-लाबा विष सिरजए
सदिखन देखू जिनगी-ले।
बिना प्रेमी प्रेम केतए
प्रेमास्पदक पकरू बाट।
नाचि-नाचि, बिहुँसि-बिहुँसि
देखैत प्रेम सरोवर घाट।

जेहने मढ़ल शंख घाट केर
तेहने शीतल सरोवर पानि
तन पवित्र मन केर सिंचू
सक्कत विवेक बना ठानि।
करए शुद्ध तन-मन केर
पहिल पहर नै छोड़ू जानि।
दिन-रातिक रहस्य बूझि
हुसू नै कखनो जानि।



सान-धार-धारा

अबैत जखनि मनुखमे सान
शानसँ चलए लगैत।
एक दोसरमे सान चढ़ा
परिवारक शान बनबए लगैत।

चढ़िते सान परिवारमे
बर्खा-बून बनि धरियाए लगैत
धरिआइत-धरिआइत धरिआ,
धारा बनि धड़धड़ाइत चलैत।

अपन-अपन माटिक रसे
अपन-अपन सभ धार सजबैत,
संग मिलि चालि-चलैत
नीक-अधला रहए बनैत-बिगड़ैत।

जइ बर्खाक जेहेन बून
तेहेन से बनबैत धार
धार मिलि धरा धार
अपना गतिए बदलैत धार।

जे धारा सिरजए गंगा
कमला कोसी ओ महानन्दा
ओ धार कहिया धरि ठमकि
मानैत रहत फंदा?
❍

पपीहाक गीत

सुनिते गीत पपीहा केर
धड़-धड़ धड़कन धड़कए
षटरस स्वर लहरीमे
चारू-दिशा सदि छलकए।

धरती अकास बीच सदए
जल-थल सिरजन करैए
कानि-अकानि बीच सदए
हँसि-गाबि देखबैए।

सानि सिनेह सदए सिरजि
नयन नीर ढुलकैए
रहितो धाराक धार संग
रूप अपन सजबैए।

रंग-रूप सिरजि सदए
शिखर-सौदर्य चढ़ैए
देखि देखि बिहिया बिहुँसि
आनि अपन जगबैए।

प्रेम प्रेमिक रूप देखि
जमुना बीच सौभरि जेना
पबिते प्रकाश पूनमक
चढ़ि ऊपर आबए तेना।

आनि जानि धार बीच
हेलैत-डुमैत चलैए
जीवन-मरणक लीला यएह
सभकेँ सभ देखैए।

❍

विषधरक बीख

सूति उठि निकलिते आँगन
लप दऽ धेलक विषधर।
तड़बाक बीख मगज चढ़िते
लटुआ खसलौं पेरापर।
जखने देखलक पहिने जौहरी
छाती पीट-पीटि फुकलक शंख।
अवाज सुनि कुत्ता अकानि
भूकि-भूकि जोड़लक शंख।

अचेत देखि जौहरी बाजल
झब दऽ मंगाउ चटधारी।
मरि गेल बाटे विषधर
बगदल यात्रा (सगुन) चटधारी।
नै उतरल बीख चटियौने
तैयो बँचल छै प्राण।
बपहारिक संग बेथा गाबि
कहिया हेतै प्रेमीक त्राण।



मिथिला केहेन

अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?
सभ दिन कमला-कोसी डुमलौं
अन्हर-बिहारि, दानो-दुख सहलौं
कानि-खीज संगे-संग रहलौं।
किसान-बोनिहारक वंश गढ़ि
धरती-अकासक बीच खेलेलौं।

आबो बुझियो मिथिला केहेन
अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?
पसरि चौर करमीक लत्ती
बुइधिक वृक्ष सजौलक।
नैतिकताक फल-फूल सजा
हँसि-गाबि जीवन पौलक।
जगत-जननी, जनक-जानकीक
मिथिलाक तस्वीर जेहेन
आबो कहू भाय मिथिला केहेन
अहीं कहू भाय मिथिला केहेन?



मौसमक मुस्की

दिन घटत आकि राति यौ भैया
मौसम मुस्की दइ छै।
साले दिनक समए कत्ते होइए
लीलाक रंग बदलै छै।
अपन-अपन सनेस बिलहि
सुरभि-सुगंध पसरै छै
खसल-पड़लमे जान फूकि-फूकि
सोग मुक्त बनबै छै।
समए ने केकरो संग छोड़ैए
ने केकरो संग दइ छै।

अपन-अपन कूटल-पीसल
दुनू हाथ समटै छै।
देखल दिन केना बितै छै
देखते देखि ससरै छै
मृत्यु सय्यापर मन तड़पै छै
बेरथक बाट पकड़ै छै।
खेल-खेलए चाहलौं जिनगी केर
बनि खेलौना गुड़कि गेलौं
अन्तिम साँस बिड़हाएल होइए
नोर छोड़ि किछुओ ने पेलौं।



आशा

खुशीक जिनगी बनबैत चलू
मगन भऽ जीबैत चलू
सोग ने सुधरए वचनसँ
रोग नै उपदेशसँ।
कर्तव्य कर्म तड़कस उठा
आशाक जिनगी बनबैत चलू
मगन भऽ जीबैत चलू।

कण-कणसँ पहाड़ बनै छै
बुन्न-बुन्न सत् सागर
अणु-अणु सोग उपजाबए
कारी घटा बनि बादर
सभ समेटि अंगेजति चलू
मगन भऽ चलैत चलू।

दिन-रातिक बीच संसार
ससरि-ससरि ससरैत चलए
खने मेघौन खने उगरास भऽ
पाबि-पाबि चलैत चलए।
तीत-मीठक भेद भूला
पानियो पानि पीबैत चलू
मगन भऽ चलैत चलू।



आँखि

छलकि आँखि बदलि तरंगि
कोन रचैता देखलनि मोर।
निवस्त्र कऽ कऽ केलनि सिरजन
कानि अखौंसी पोछए नोर।
नाक नचए पहरि नकौसी
चक्र टकड़ाबए चढ़ि-चढ़ि सिर
केहेन भेल ई बीच मधुरक
सटि गेल तौलाक बीचक हीर।

सदिखन दोहरी खेल रचि
रखलनि सेहन्तगर नाओं
चेहरा-मोहरा काटि-छाटि
ठाढ़ भेल बनि-बनि गाओं
सुनि कान सनसना कुकि
पकड़ि सुगंधित बाट सु-आन
गुण दऽ गुणी बना-बना
कालचक्र संग गाबए गान।



मधुरस

जंगल जे बास करए
बनफूल-फल से खाए
इच्छित मन लोढ़ि-बीछ
मधुरस सतति बनए।

एक बन पसरि विश्व
काटि-छाँटि देश बनबए
अपना-अपनी बाट गढ़ि
सभ चाहए मधुरस पाबए।

कटुरस मधुरस बीच भेद की
मात्र सीमा पार करब
टपिते-टपान दुर्गकेँ
खटरस बनि-बनि रूप धड़ब।

नजरि तानि विश्वरूपा केर
बिष-रस बाट बँटैए
अपना-अपनी हथिआबए चाहए
बाटे-बाट झगड़ैए।

पौरुष पाबि पुरुषार्थ जगए
नै तँ कुंभकर्णी सुतए
सिरजि वंश सखा रावणक
सखा-सखा सटि वृक्ष बनए।

पाबि पुरुषार्थ पौरुष केर
रोकए नै केकरो बाट
जिन्ह भाव सदि पाबि-पाबि
सिरजए नित नूतन घाट।

देश अनेक लोक अनेक
भाव अनेक भावना अनेक

बीच रचि चालि मायाक
भाव दुरभावना बनबैत।

सिरजए मधुरस अमृतरस केर
नै तँ दुरभावना जगए
अंध भऽ अन्हरा अन्हारमे
अमृत रस केना पाबए।



बीआ

बीआ खसए जेहेन धरती
तेहने तँ गाछो उगैत
रौद-बसातक सह पाबि
संगे-संग चलबो करैत।

लइते जनम धरतीमे
डेग उठा चढ़ए अकास
काले-क्रमे घुसैक-घुसैक
दुनू बीच करए-चाहए बास।

सिरजित भऽ स्वयं सिरजक बनि
हँसि-खिल बिलहए सनेस
भक्तक आह सुनि जेना
पकड़ि भगवन सिनेही भेष।

चक्रक चक्का पकड़ि चुहुटि
लगबए आस जिनगी केर
धरती-अकासक ओर दू
नै अछि सोझ बाट भूमा केर।

धार अनेक धारी अनेक
विशाल वृक्ष धरती केर
खोलि हृदए सेवा निमित
अलिसा टगैत प्रेमीपर।

दुर्ग अनेक ढाल अनेक
दुर्गम बाट धरती केर
शक्तिसँ शक्ति सटि
सिरजै शक्ति शक्ति केर।

अकास बीच देखि सदति
सूर्ज संग-संग चान

अनेक तरेगन बीच एक
गाबए सदा गीत तानि।

खेल अजीव ऐ सृष्टिक
सिनेही सिनेह गुड़काबए गेन
हारि-जीतक मान न माने
बना रखए सदति प्रेम।

जोग भोग सिरजए सदए
एक-दोसराक विपरीत चलए
दू पाटनक मध्य-बीच
सिरजि सृष्टि आगू बढ़ए।



महजाल

महजाल पसरि पुरनी पोखरि।
माटि जलधर कात केचली
उड़ि उड़ि सदए चालि बदलए
पाबि गदियाएल जुआनी
नाचि-नाचि जिनगी बदलए।
एक-दोसरकेँ ठोठ दाबि
गैंची-अन्है रूप धड़ए
पाबि प्रकृतक वेढ़ंगी चालि
कानियौं खीज जिनगी धड़ए।

नीकक गुण छी नीक बनबैक
अधला किअए पुस्तैनी छोड़त
अधला जँ चालि-वानि बदलए
नीक किअए अभिमानी छोड़त।
भलहिं भभकि जाए इचना-पोठी
तेकर नै परवाह करू
सजि रूप सरिता सरोवर
धीर भऽ धीरज धरू।
ससरैत देखि महजालकेँ
जरैत जाठि चिकड़ि कहत
गतिया-गतिया रूकि ठमकि
सभ किछु सुनबैत चलत।



बाट

चलि-चलि बाट बनबैत चलू
सोचि-विचारि चलैत चलू।
तीन चास जोतिते-जोतिते
ढेपा फुटि-फुटि माटि बनए।
चिक्कनमे सभ चाहे चलए
चलिते-चलिते बाट बनए।
मलड़ि-मलड़ि ससरैत चलू
मखड़ि-मखड़ि गबैत चलू।
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

पाँच पएर पड़िते-पड़ैत
चुनमुन माटि करए इशारा।
बनि पहरूदार दिन-राति
हँसि-हँसि दैत इशारा।
संगी-संग अकड़ैत चलू
डेग-डेग मिलबैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

बाट बनए जहिया जेतए
सोझ-साझक मांग करए
अगिला-पछिला मिला-मिला
बीचो-बीच बढ़ैत चलए।
गीताक गीत गाबि-गाबि
जिनगी परखैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।

सदिखन सनातन सहमि-सहमि
नव कनियाँक सदृश कहए
नव सूत जेबर पाबि-पाबि
वसन्त राग भरैत कहए।
जँ किरदानी (कमैनी) नै तँ जुआनी की
जँ जुआनी नै तँ मर्दगानी की
बिनु युद्धभूमिक मर्दगानी,
अछिया पड़ल जिनगानी छी।

चेत-चेत चित्त चेतन
समवेत संगीत बजबैत चलू
झूमि-झूमि मलड़ैत चलू
चलि-चलि बाट बनबैत चलू।
जिनगीक गीत गबैत चलू।



डभियाएल डगर

नित नित्यानन निनाएले निकलए
देखए दुनियाँक दीन-दशा।
मधुआएल मन करुयाएल आँखिए
झलफलाइत देखए दशा-दिशा।

कोनो बाट एकपेरिया कहबए
खुड़पेरिया कहबए दोसर।
जोहैत सदए जेर जइ
बनैत बाट नव तेसर।
भोरहरबा अन्हार रहने
नीनपनी देलकनि पछाड़ि।
राड़ी-डबहाड़िक बीच पड़िते
हाथ-पएर देलकनि गछाड़ि।
ओझरी सोझरबैमे
नित्यानन भेला वेदम।
हारि नै थकान थकिते
अबए लगलनि हिआ दम-दम।
विह्वल भऽ आर्त्त राड़ी
बिजकि बाजल कानि-कलपि।
संग मिलि सभ दिन रहलौं
लेलकनि बाँहि लपकि।

फूल फुलाइत जहिना सभतरि
तहिना ने फुलाइ छी।
पूरि संग रौद-बसातमे

संगे-संग उड़ियाइ छी।
एक चढ़ए देव सिर ऊपर
दोसर चढ़ए महा-अकास।
बाँकी सभ गलि-पचि
ससरि-ससरि पहुँचए पताल।

❍

लज्जति

बिनु लज्जतिक जिनगी ओहने
बिनु परनक प्रतिष्ठा जेहने।
रस पाबि हरियाइत जहिना
नीरस होइत सुखाइत तहिना।
मधुरस रिसै विवेक वृक्ष
सिरजए सदि जे लज्जति।

लज्जति हीन जीवन ओहिना
गैचिया पाताल धड़ैत जहिना।
लज्जति तँ शोभा जिनगीक
सैजते होइत आभूषित।
तीत-मीठ भेद बिनु बूझि
हँसि-हँसि होइत विभूषित।
लज्जतिक लत्ती अमर
सड़ितो-मरितो सिरजए शक्ति।
तर-ऊपर रसा-रसा
लगए करए सदति भक्ति।
जिनगीक पद्धति रंग-बिरंगक
नीक-बेजाए बेड़ाएत केना।
पूबसँ उत्तर धरि
मिलि समाज चलल जेना।



गीत-१

ओढ़ि दुपट्टा नम-गम केर
बति वसंती बौड़ाइ छै।

खटमीठ रस चूसि-चूसि
तिरपित भए औनाइ छै।

सुरभि सुगंध पीबि सिहरि
कू-कू कए कुकूआइ छै।

चेत मन मधु स्वर तानि
बिलति-बिलति बिलबिलाइ छै

दसो दुआरि दृष्टि दौगाए
चनकि चैत चुनचूनाइ छै।

❍

(श्री शिवकुमार झा 'टिल्लू'जी लेल..)

गंग स्नान

उठि भोरे छोड़ि घर,
चललौं नहाए गंग।
घर-परिवार समेट,
देह धरौल अंग।
अन्हरोखक राह हराएल,
झल-फल करए आँखि।
दुनू डेन पसारि,
लगौल माछक पाँखि।
दिन जगल रश्मि छिड़ियाएल,
देखल तखनि गाम।
लटुआएल फुलवाड़ी सुखैत,
पहुँचल एक सुरधाम।

सभ पापक जननी अहाँ मैया
जुनि बिलहू अपन सनेस।
दूध बूझि भक्तजन पीबए
सनकि पड़ाए दूरदेश।



फनकी

फनकी बना फसा शिकारी
फसौलक सौंसे जंगलकेँ।
बगरा-बुगरीक चर्चे केते
नथलक बाघ, गेंड़ा- घोड़ाकेँ।
खढ़-पातक बना-बना
बुनलक सक्कत जाल।
घुमा फेकैत भीड़ो कहाँ
बनि गेल तरे-तर महजाल।

खढ़क फनकी लगल बगड़ाकेँ
तैंइतमे फसि गेल सियार।
डोराक फनकी लगल साँपकेँ
भ्रमक फनकी फसल बुधियार।

❍

सभ किछु छै जालेमे

सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।
घुरियबैक लूरि जखने हएत
सभ किछु भेटत बातेमे।
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

शब्दजाल छी महाजाल
जइमे समटल महाकाल।
देखैमे जहिना विकराल
तहिना अछिओ महाकाल।
सभ किछु भेटत आँखिएमे
सभ लटकल अछि जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

जे जेहेन अछि जलवाह
से तेहेन फेक फेकैए।
गैंची ने गैंचिया जाइए
रोहु, भाकुर तँ फँसिते-ए।
सभ किछु भेटत जालेमे
सभ किछु छै गालेमे।

गाल बजबैमे जे जेहेन
से तेहेन जाल फेकैए।
इचना-कोतरीकँ के कहए

डोका-काँकोर धरि फँसैए ।
सभ किछु छै गालेमे
सभ फँसल अछि जालेमे।

❍

गंगा नहाए

गंगा नाहए सभ जाइ छथि, बाबू
अहूँ किअए ने जाए चाहै छी।
गहनक पूर्णिमा पड़ै छै
तइपर कातिक मासो छी।

के सभ जा रहल छथि बौआ
जा कऽ कनीए भाँज लगाबह।
केना-केना के सभ जेता
झब दे कनी बुझने आबह।
पढ़ुआ काका, गुरु कक्काक
संग छित्तन-मित्तन दुनू भाँइ।
कनियाँ काकी सेहो जेती
भौजीक संगे लालो भाय।

बिनु संगीक संग गेने
ऐ उमेर बैमानी हएत।
तोरा केना असकरे कहबह
मनक संग प्रपंची हएत।
अहाँ विचार फुट देखै छी
आरो लोकनिक आरो विचार।
बीचमे नै बूझि पबै छी
कहू कनी हृदैक विचार।
गंगा तँ दुनियाँक धारा छी
बहए सदा सभ कोण।
घेर बान्हि जँ अपने बूझब

थिक ई अपन मन।
दुनियाँक एक-एक मनमे
गंगा धार बनल छै।
जे जानै-पहचानै ओकरा
नित स्नान करै छै।

❍

गोधन पूजा

सरस्वती-लक्ष्मी दुनू बहिन
मिलि-जुलि गोधन पूजलनि।
मन संकल्प सिरजि दुनू
चलैक दिशा मन ठनलनि।
एक चचलि मटिआरी रस्ता
दोसर धेलनि गोलोक बाट।
दिलीपक अमूल्य सेवा देखि
पंचागम रचि सजलनि घाट।

जे गाएक गोबरसँ
गोबरधन पहाड़ बनै छै।
ऐ गोबरधन बखारमे
अन्न-कण अम्वार लगै छै।
वएह गोबरधन उठा कृष्ण
जान बचौलनि ब्रजवाला।
झाँट-बिहाड़ि, पाथर-ठनका सहि
मुरली तानि देलनि नन्दलाला।
क्षीर सागर किनछड़ि बिरजि
सरस्वती लक्ष्मी दिस देखलनि।
एके गाछक दू डारि छी
अपन-अपन पुरखा जगलनि।
एक चलए अकास मार्गसँ
दोसर धरती बीच ओंघराइत।
मने-मन दुनू आनन्दित
राति-दिन सदति बौआइत।



माटिक फूल

हँसि-फूलि चढ़ए देव ऊपर
कली फलकि बक्ष ऊपर
भूख-पियास मिलि आफन तोड़ए
जड़ि जनमए धरतीपर।

लीला अजीव अछि दुनियाँक
धरती-अकास छिड़िअबए क्षीर
भीर-कुभीर देखि-देखि
ससरए सदति संग समीर।

एक फूल शोभा सुख पाबए
दोसर बाल-बोध सिर ढाबए
सृष्टि सिरजि तेसर हँसि गाबए
राग-विरागक ताल मिलाबए।

उड़ए सुगंध समा धरतीसँ
चालि चलाबए चाक कुम्हार
मृत कुआँ तर-ऊपर वसुधा
सानि-बाटि लगबए अम्बार।

पड़िते-फुहार चढ़िते अखाढ़
महमहबए दिन-राति सुगंध
कोण-कोण चारू कोण पसरए
निशाँ नचति बनि मदान्ध।

जे कहियो रोदियाह रौदमे
ठोंठ सुखाबए भूखै-पियास
धरि-धरती धीर हृदए
पीबि, पाबि जिनगीक आस

उठि-बैस ओंघराइत छिछलए

कानि-कलपि दऽ दंड-प्रणाम
अश्रुधार बीच डुमकी लगा
जमुनिया धार बीच प्रणाम

सदिखन प्रेमी बाट जोहि-जोहि
छन-छन छनछनाइत मन
दाबानल-बड़बानल लहरिमे
जठरानल बीच तड़पए मन।



झगड़ा

भाँग पीबि भकुआ शिव
चुप भऽ बैसला आसन।
धो-धा सिलौट-लोढ़ी
पार्वती लेलनि चढ़ा।

लग आबि पाँजर बैसते
बीन-बिन्नी उठलनि मन।
नजरि उठा देखते
कड़कि बजलनि मन।
सिहरि छाती डोलिते
थर-थर कपलनि तन।
कलपैत मन खिसिया
अधे-छिधे पुछल प्रश्न-
"अहाँ कहू केकर छी प्रेमी
गंगा आकि अपन।
सिर सजौने छी गंगाकेँ
पतिअबै छी हमरा।
पुरुखक कोनो ठेकान नै
बूझि पड़ैए हमरा?"

कनखिया शिवजी बजला-
"भाव लेल प्रश्न भावसँ
उठाउ सदिखन आगू।
चिन्मय रूप समेटि हृदए
बढ़ाउ डेग सदि आगू।"



नजरि

आँखि पुछलक-
दीदी, सभ किछु देखितो,
किछु ने देखै छी।
कलपैत मन देखि
भरि-भरि दिन कनै छी।

नजरिक उत्तर-
सगतरि तँ फूल छिटाएल-ए
गुणसँ भरल-पुरल।
रस चुसैक ज्योति बनाउ
भेटत तखने मीठका फल।

❍

कमलाधार

कमल-नयनसँ उगैत अश्रुकण
संग मिलि धार बनल छी।
समरस भऽ रंग-रूप बिसरि
नयन-कमल बनल छी।
काटि-खोंटि एकबट्ट केनिहारि
करत उकठपन काम।
सभ मिलि सोचि-विचारि कऽ
जपलौं कमला नाम।



बाल कविता

पुत्र- बाबू यौ, पनिया दूध किअए बेचै छी
एकरे ने पाप कहै छै?
जानि-बूझि जे करए ढिठाइ
तेकरे जमदुत पकड़ै छै?

पिता- कहलह बौआ मधुर बात,
सिहरि-सिहरि हृदए सिहरि गेल।
अजीव खेल धर्म-पापक
हँसि-हँसि जिनगी टुटैत गेल।

पुत्र- की अजीब खेल धर्म-पापक
गुरुवर-गिरिवर बनि कहू।
कर्म, अकर्म, विकर्म, सुकर्म,
बिलगा-बिलगा बुझा कहू।

पिता- बाल-बोध रहितो अहाँ
जिनगीक रहस्य-रस तकलह।
जिज्ञासाक उठैत ज्वार
समए पाबि-पाबि पेबह।



भभूत

लगिते चाइन बाबाक भभूत
चेलबा हँसि-हँसि बाजल।
छाउर केना भभूत बनि
छजनीपर जा अँटकल।
सुनिते चेलबाक पेटक बात
पेट खोलि आसन लगौलनि।
आँखि खोलि नजरि मिला
प्रभुताक दर्शन करौलनि।
जिद्दी चेलबा मानता ओहिना
प्रभुताक परमान मंगलकनि?

पैरुख नाओं प्रभुताक कहि
झटपट अपन जान छोड़ैलनि।
जिद्दी कि जिद्दी चेलबा छी
पैरुखक परमान मंगलकनि?
सामर्थ कहि आँखि घुमा
चटपट अपन काज ससारलनि।
नमड़ी जिद्दी जेहेन चेलबा हुए
तइसँ कम की बाबाक चेलबा
तड़पि-चेलबा लग आबि
समर्थकक परमान पुछलकनि।
शक्ति समर्थकक उत्तर दऽ
मुँह मारि बाबा बैसला।
बोलती बन्न देखि बाबाक
डुमकी दैत चेला डुमला।



झूठ-साँच

झूठ-साँचक साँच केते
उत्तरी-दछिनी ध्रुव जेते।
कोनो चलैत शुभ्र समीर संग
कोनो चलए वोन-झाड़क।
कोनो चलए धरती-धरातल
कोनो चलए शब्द जालक।

सत् बनबैले एक झूठ
हजार-हजार चालि धड़ैत।
मुदा एक साँचक शक्ति
सदए ढनमनबैत रहैत।
जहिना घनघोर घटाकेँ
हवा उड़बैत रहैए।
तहिना देखिते बोनैया
लोकक सुन-गुन पबैए।

झूठ-साँच कहब केकरा?
जे शब्द हजारो बेर
बजलो उत्तर ठामहि रहत।
मुदा ओ जे बेर-बेर
सभ बेर बदलैत रहत।
रूप सजि नव श्रृंगार कऽ
मनकेँ मोहैत रहत।
शुभ्र ज्योति पड़िते सदति
चेहराक रंग बदलै छै।

मुँह खोलि किअए ने
झूठक डाकनि दइ छै।

साँचक पजरे-पजरा
चलि-चलि जान बँचबैए
केतौ छाँह केतौ ठमकि
मायापुरी सिरजैए।

❍

नव दुनियाँ

चलू यौ भैया चलू यै बहिनी
नव दुनियाँ बनबए चलू।
सभ स्वतंत्र अछि अपना-ले
अपन दुनियाँ बनबए चलू।
पाँच कलासँ बनल जीव
आनन्द कलासँ सज्जित छै।
तीन कला सिरजैबला
संग मिलि संग चलै छै।
आगूक जे आठ कला छै,
ओ तँ अपने सिरजए पड़ैत।
जँ से नै तँ, जहिना छी
तहिना काहि काटए पड़ैत।
नै कठिन छै स्वतंत्र जन-ले
सोलहो कलाक कलाकारी करब।
विश्वामित्र, विश्वकर्मा बनि
नव दुनियाँक सिरजन करब।
जहिना गाछक डारि मधुमाछी
जगह टेबि घर बनबैए।
तहिना ने सभ अपना-ले
जगह देखि दुनियाँ बनबैए।



पुरुषार्थ

हँसि-हँसि हम बाजि रहल छी
पुरुषार्थ बघारि रहल छी।
झाँपि-तोपि अपन किरदानी
मुँह खोलि बाजि रहल छी
पुरुषार्थ बघारि रहल छी।

नोकरीमे जिनगी बितेलौं
पराधीन भऽ जिनगी जीलौं।
अपन पीठ अपने थपथपा
मालिकक सान देखा रहल छी
पुरुषार्थ बघारि रहल छी।

सहि-मरि जे जिनगी जीलक
आत्म-चुहै कऽ सेवा केलक।
पवित्र मातृभूमिक सेवामे
पवित्रतासँ जिनगी लगौलक।
तेकरा हम ललकारि रहल छी
पुरुषार्थ बघारि रहल छी।

जाधरि नोकरी करै छेलौं
सर्भिसमैन कहबै छेलौं।
जहियासँ नोकरी बितल
सर्भिससँ सेवा-निवृति कहेलौं।
शब्देक ताना-बाना बुनि-बुनि
जिनगीक हाथ ससारि रहल छी

पुरुषार्थ बघारि रहल छी।

उचित-अनुचितक विचार केना
समरस मुँह बना बाजब
घूस-घासक चरचा केना
सकुचाइत मन, मुँह खोलि बाजब।
तैयो बोली झटकि-झटकि
झटहा मारि तोड़ि रहल छी
पुरुषार्थ बघारि रहल छी।



सरस्वती वंदना

साले-साल किअए अबै छी
क्षणे-क्षण अबैत रहू
हर क्षण हर मनकेँ
अमृतसँ भरैत रहू।
क्षणे-क्षण...

नव शक्तिक नव उत्साह दऽ
सिरजन शक्ति भरैत रहू
कर्म-ज्ञानकेँ घोड़ि-घोड़ि
सिनेहसँ सिनेह सटैत रहू।
क्षणे-क्षन...

जे हूसल से हम्मर हूसल
तइले किअए छी कलहन्त
सभ जागैए सभ सुतैए
एक दिन हेतै सबहक अंत
नजरि-उठा देखैत रहू।
क्षणे-क्षण...

देवी अहाँ, मैया अहाँ
भेद केतौ अछि कहाँ
जोड़ल आँखि उठा-उठा
पले-पल देखैत रहू
क्षणे-क्षण अबैत रहू।


भीड़-भार

अपने पएरे चलिते चलनिहार
दोसरपर नै भार दैत।
मन उपकै चाइलिक खुशीसँ
संग-संग डेगो बढ़ैत।
लत्ती सदृश दोसर भरे
धुसि-धुसि खसि बाट-घाट।
धारक पानि सदृश फेका
धारासँ टुटैत रहैत लाट।

टुटिते लाट धरासँ
भीड़े-भीड़ बनैत रहैत।
एक्के-दुइए भीड़ टपैमे
भीरेमे भरमैत रहैत।
भीर-भारक दुनियाँमे
भीड़ा-भीड़ी जोर चलै छै।
धक्कम-धुक्काक संग-संग
धक्का-मुक्की सेहो चलै छै।

भार बनि नै भार कहियो
अपन भार दोसरा दियौ।
अपन-अपन कन्हेठ भार
संग मिलि चलैत रहियौ।
लेब साँस आरामक जखने
भीड़े-भीड़ भार पकड़त।
गहुमन साँप सदृश बीख

समए पाबि सेहो लपकत।

कहैले साँपो हरि छी
हरी बेंग सेहो कहबै छै।
नारायण सेहो हरी कहबए
नित: व्याकरण बुझबैए।

❍

सरस्वती हमर

हे माँ सरस्वती,
अपना ऐठाम ओइ दिन हे माँ
रस्तेसँ सम्हारि आनब।
भगवतीक रूप जइ दिन
बाँहि पकड़ि अरियाइत आनब।
सोग-पीड़ा दुनियाँक मनुक्खक
मोटरी बान्हि माथ चढ़ौने आएब।
अपन सोग-पीड़ा बना-बना
रक्तक संग सजौने आएब।
आनक यंत्रणा जखनि अपन
संग मिल डेग उठैत चलत।
उत्पीड़ितक कथा-बेथा
ललकार मन भरैत चलत।
वसुन्धराक सिंगार जखनि
विश्व सुन्दरी बनि नचत।
तखनि, हे माँ सरस्वती
नयन सिक्त प्रेमाश्रु भरब।
कलमक नोक जखनि अहाँ
प्रवाहित होइत ससरैत रहब
भगवतीक रूप गुण संग
अपना ताले गबैत रहब।



अगहन

ठोर रंगि तर-तर करै छै
लोक देखि-देखि मुँह दुसै छै।
लगनक आश छोड़ि-छाड़ि
कूदि-फानि घर अबए चाहै छै।
कहिया धार कुटाएब हँसुआमे
कहिया धारक सान बनाएब
कातिकक पुर्णिमो बितल
कहिया देहमे पानि चढ़ाएब।
तीन दिन, आठ अगहनमे बाँकी
धड़फड़ बेसी, नै अगुताउ।
धीरजसँ सभ किछु होइ छै
तइ बीच घरक काज सरिआउ।
गेल माघ पच्चीस दिन बाँकी
आबो किअए छी मन्हुआएल।
आशा पाबि मन कलशै छै
मौलाएलो गाछमे फूल लगै छै।
संगे मिल चलब कटैले
बच्चोकेँ कोरा लऽ लेब।
लोटामे पानिओ नै बिसरब
पनबट्टी सेहो लैए लेब।
रतुका नाच बनौआ होइ छै
दिन-दुपहरिया नाचब मैदान।
चौकीक तँ स्टेज नै छिऐ
हँसबै, गेबै, मान-सम्मान।



केना मेटत गरीबी

केना कऽ मेटत गरीबी हो भैया
केना कऽ...।
अछि भरल सोना मिट्टीमे
भरल अछि हीरा-मोती।
खुनैक ओजारे अछि गजपट
केना कऽ पेबै मोती।
सोन बिना कानक जहिना
तहिना ने माटिओ छै।
ने अछि पानि आ ने श्रम छै
ने खाद आ ने बीआ छै।
तखनि कोन आस करबै हो भैया...
सत्ते कहै छी ओजारो बनलै
नहर खुनेलै कोसीसँ।
धारक तँ चालिए अजीब
बिनु बरखे पानि औत केतएसँ।
खादक बदला माटि अबै छै
बोरिंगक पाइपो तेहने नकली छै।
पम्पिंग सेटक कथे की कहब
तीन बेर साले सिसकै छै।
अहीं कहूँ केना हेतै यौ भैया
केना कऽ...।
बिनु खेतक आकार देखने
फसिलक केना पहचान करब।
उपजल दाही जखने हेतै
कोठीक किअए जोगार करब।

विज्ञान बहुत उन्नति केलकहें
सच्चे कहै छी यौ भैया।
घासे बिखाह उपजि खेतक-खेत
कोन मनसूबे दुहबै गैया।
केना कऽ...।

ललो-चपोसँ काज नै चलत
इमनदारीक नेत बनाएब।
फुलल-फड़ल खेत चमकत
देखि वसन्ती तखनि गीत गाएब।

ता धरि नै चलतै यौ भैया,
ललकारा केतबो देबै।
ताल ठोकि केतबो कूदब
खलीफा नै बनि पेबै।
सएह कहै छी सुनू यौ भैया
केना कऽ...।

❍

बाढ़िक सनेस

जँइ नहाए कोसी जाइ छी
जाइ छी कमला घाट।
अपने फुड़ने आबि-आबि
धो-धा देखा दैत बाट।

हँसि-हँसि घरसँ निकलि
खोंछि भरने एली।
मुट्ठिए-मुट्ठी बाँटि-बाँटि
गामे-गाम बिलहि देली।
खोंछिक सनेसो तेहने
ठेंगी, खच्चरलत्ती ओ हराशंख।
हराशंखो तेहने गढ़ल छै
ने छी डोका ने छी शंख।
खच्चरलत्तीक खचरपनीसँ
तंग-तंग होइए किसान।
काटि फेकब जेतए तेतएसँ
मोछ टेरैत देखबए शान।

गाछी-बिरछी, दिशा मैदानक
रोकैक ठीका ठेंगी लेलक।
खेत-पथार टहलि-टहलि
वोन-झाड़ सेहो अपनौलक।

❍

अगो-लोढ़ा

हे गे बेटी गे, हे गे धीया गे
आइ धरि दुखक दिन कटलौं
काल्हिसँ औत समए सुखक।
राति भरि जागि मन पाड़िहेँ
बितल साल, मास दिन दुखक।
कोन नक्षत्र आबि रहल छै
कनीए दे हमरो बुझा।
कोन सुख काल्हिसँ औत
सेहो दे नीकसँ सुझा।
धनकटनीमे हाथ लगेबै
हाँसू धार कुटौने छी।
संग मिलि तोहूँ लोढ़िहेँ
लोढ़ा बीछा तोरे ने छी।
चारि साल जेते जे लोढ़लौं
अगो तँ तोहूँ दैत एलँह।
भुरकुरी ढन-ढन करैए
कुटि-चुड़ि तोहीं खेलँह।
समए पाबि खेलियौ बुच्ची
सूदि दऽ पूरा करबौ।
अगो-लोढ़ा जोड़ि-जाड़ि
मूरिक संग सूदिओ देबौ।
एहेन अलछनी हमहीं हेबौ।
माए-बापसँ सूदि लेब।
महाजनीक कारोबार कऽ कऽ
महाजनीक भार देब।

नै बेटी नै बुच्ची, नूनू
मुँह दाबि एना नै बाजह।
जेते गहन लगल बीच अछि
दोबरा-दोबरा मुड़ घुरेबह।
सुनि-सुनि मन तड़पैए
माए-बाप की हम्मर नै।
बेटा-बेटी भेद केतए अछि
सेवा की हम्मर नै।



हथियाक झटकी

चढ़िते चैत पतरा कीनलौं
सालक हाथक रेखा देखलौं।
देखते नजरि दौगल राशिपर
नाओं अक्षर तेकरा बीछिलौं।
खट-मिट्ठी राशि देखि
पाछू दिस उनटि ताकल।
तीन नामे लोक जनैए
देखिए कऽ मन थाकल।

आगू बढ़ि उपजा लग गेलौं
पानिसँ बेसी धाने देखलौं।
हवा-विहाड़ि, ठनका भुमकमक
चर्च-बर्च केतौ ने देखलौं।
मन खुशी भेल, घरहट बाँचल
भगवान भरोसे ई साल चलतै।
घरनीक तगेदा अनठबैत
एको घर नै ऐ साल छाड़लौं।
हथिया तँ उनाड़ी बरखाक
झटकी केतएसँ दौगल आएल।
मनक सभ खुशी मनेमे
सभटा रहि गेल धएले-धाएल।
एकटा घर माटि पकड़लक
दोसर चोंगरा बले ठाढ़।
तेसरक कोनचारी लटकल
चारिम भीतक भरे ठाढ़।



रहसा चौर

भीतर मिथिलाक ओ भूभाग
चौड़गर एकटा चौरी छै।
दूर-दूर धरि पसरल-पसरल
बिसवासू खेतीक भूमि नै छै।
नअ मास पानिए गुड़गुड़ा
हिआ-हारि कनबो करैए।
माटिओक कर्मक फल तेहने
अपने बेथे चिचिआ रहल-ए।
तीन मास सुखा सुख पाबि
करमी, केशौर कोढ़िला सजबैए।
जिनगी-मृत्युक भय मेटा,
संग मिलि सभ भाँज पुरबैए।
चारि गामक बीच बसल
नमगर-चौड़गर सीमा घेरैत
चारू कातक पानि गुड़कि
अद्रेसँ झील बनबैत।

गामक माटिक जँ दशा एहेन
मिथिला राज केहेन बनतै।
बाहरे-बाहरक सुसकारीसँ
गहुमनक बीख केना झड़तै।
विचार इमानक केकरा कहबै
खोलि देखू मातृकोष।
अपने-आप प्रश्न पूछि
विचार करू सम्हारि होश।



बेरोजगारी

राँड़ कानए अहिवाती कानए
तइ संग बर-कुमारि कानए जेना।
रोजगार कानए बेरोजगार कानए
हिबडिब करैत सरकार कानए तेना।
बेरोजगारसँ देश भरल छै
बौस बिना कंगाल बनल छै।
तइ बीच रोजगारे हराएल
तमसगीर तमाशा देखि रहल छै।
सभ छी शुभचिन्तक देशेक
सभ विचारक संग नेता छी।
मुसहर बीच मूस हराएल
धीया-पुता खेतै की?
दिशाहीन रोजगार बनल छै
रंग-बिरंगी दुनियाँ बनल छै।
केतौ पेन्शनधारीक रोजगार
तँ केतौ करैबला बेरोजगार।
जाधरि दुनू दिशा मोड़ि
डोरीसँ नै गतानब।
सूतल सपना अधनीनामे
दिन-राति देखैत रहब।
पाँच हजारक नोकरीमे
मोबाइल गाड़ी ओ चौक-चौराहा
खुशी-खुशीक जिनगी बना
गोधन दिन लिअ हुरियाहा।



लीढ़ी पोखरि

सुदामा दीदीक खुनौल पोखरि
कुमोल बनि पड़ल अछि।
कियो मुइलही कियो लीढ़ी कहि
अपन आँखि मूनने अछि।
टटका नफ्फा सभ कियो देखए
घाटाक बाट देखबे ने करैत।
गामेक तँ छी सम्पति पोखरि
एहेन विचार उठबे ने करैत।

जहिया खुनौलनि पोखरि दीदी
तइ दिन छल ओ देवघर।
तियागिते ऐ दुनियाँकेँ
बनि गेल ओ फूसिघर।
कियो ने कलपरदार छै ओकर
तखनि के विचार करत।
गामक सम्पति बूझि-बूझि
उत्पादित सम्पति बनौत
जाधरि प्रतियोगितामे बैसए
गाम-गाम तैयार नै हएत।
ता धरि अहिना लीढ़ी पोखरि
नीकहो सभ बनैत जाएत।

चेतु, आबो चेतु, जे दिन बितल,
से दिन बितल।
उठा आँखि आगू बढ़ाएब

तखने पाएब भविष्य फल।



बकरी भेराड़ी

टुटिते नीन खुजैत भक्क
मनमे साँझुका बात जागल
विचारि नेने रही काल्हिए
पहुँचते रोपब गाछ फलक।
टुटिते भक्क मन ठेलए लगल
शुभ काज विलम नै।
मुदा हाथ लगबैसँ पहिने
अँटकि मन किछु ठमकल।

खेत अपन, खुरपी अपना
मुदा, बकरी भेराड़ी तँ नै
आइ धरि भेल अपना।
एक बकरीक भेराड़ी
आमक एक गाछ पालि पबए।
मुदा भेराड़ी तँ भेराड़ीए
आइ धरि नै जानि पेलौं।
जकरा भेराड़ी छै,
नै छै ओकरा चास-बास।
जँ से रहितै तँ
करितए एक सजमनिओ आस।
भरि देबै गाछक दड़ी
बकरीक सुखाएल भेराड़ीसँ।
समए-समए पटबैत रहबै
आशा पुरतै परुकासँ।



महगी

दस सगे नितराइत विचार
दस सगा देखि डरि रहल छै।
एके गाम, परिवार भैयारी
भाए-बहिनसँ डरि रहल छै।

कियो बाजए धी बसाएब पुन
तँ कियो चेतबैत धी-भागिन
खेलो सभ अजगुत छिड़ियाएल
खेलाड़ी देखबए तोड़ि तानि।
देखए पड़त, विचारए पड़त
एना होइए तँ केना भेल?
आजुक जे खाहिंस छै
ओ हएत तँ केना हएत?
अरबो टन अन्न माटि पड़ल
करोड़ेमे जाँत पीसै छी।
उन्नति-उन्नति घोल करै छी
हृदए खोलि बाजै छी।

किछु दबाएल माटिक तरमे
तँ किछु काटए जहल गोदाम।
मौगियाहा पहरूदार बनि-बनि
कठपुतरी नाच देखबैत ठाम-ठाम।
जइ उन्नैस सए एक ईस्वी
मन धान तीन मन खेसारी।
रूपैआ बरबरि रहए

नजरि उठा देखू भैयारी।
❍

जरनबिछनी

जरनबिछनी, जिनगी बूझि
हथियार संग रणभूमि चलैत।
गाछी-बिरछी ओ बँसबिट्टी
ठहुरी-कड़ची बीछि-बीछि रखैत।
साँप-कीड़ाक डर कहाँ छै
वोन-झाड़ हाथ बढ़बै छै।
काँच-सूखल बेड़ा-बेड़ा
सजि-सजि पथिया रखै छै।

बिसरि गेल कहिया केतए
नुआ होइ-छै नांगट बचाएब।
सिहकल, मसकल फटल मैल
चेफड़ी सटल इज्जत बँचबैत।
जहिना लोहिया ओढ़ि-ओढ़ि
जुग बितौलनि लोमस बाबा।
चोंचा खोंता सिर सजि तूँ
मुँह छिड़अबै छै मकइक लाबा।

कनी सुन गै जरनबिछनी
नाओं-ठेकान बतौने जो?
स्वतंत्र देशमे तहूँ बसै छँ
से कनी-मनी कहने जो।
तोरो देश स्वतंत्र भेलौ
आकि भेलौ स्वतंत्र पुरखा।
देवी-दुर्गा कोइ ने देखलकौ

से कनी कहने जो।

❍

नव-फल

अहाँ बागमे हमहूँ बाबू
चुनि एक फल लगौने छी।
सुआद तँ नै पौने छी
आशा नीकक धेने छी।
छी नै हमर बाग ओ बौआ
पछिला पीढ़ीक लगौल छियनि।

एकाएकी ओगरबाहि करैत
बगवाड़ि करैत बाग धेने छियनि।
हुनके सबहक लगौल ओ बौआ
बेख-बुनियादि सेहो छियनि
गम्हारि सीसो ओ ताड़-खजुर
खरही, खरहोरि सेहो छियनि।
अपन कहाँ किछु कहलिऐ बाबू
युगक धरम किछु ने पड़ल?
पुरुखामे पौरुष दाबि
अपन किछु ने मन पड़ल?
तोहर सवाल सुनि हृदैमे
गुदगुदीक संचार होइए।
तीन शक्ति चलए जेतए
परिवर्तन साकार होइए।
धर्म सनातन यएह कहबै छै,
समए संग सटल चलए।
दुलड़ैत-मलड़ैत संग
झुमि-झुमि गबैत चलए।

बौआ, तोहूँ तँ अपन किछु
दिन-देखार पथार पसारह।
दबले-दाबल केते दबाएल
रंगमंचपर खेल देखाबह।
तेसरा रोपलनि आम रघुनी भाय
घौंदा-छौंदे फड़लनि ऐबेर।
ओकरे एकटा आँठी आनि
खाली देखि रोपलौं ऐबेर।

❍

पू-भर

माए गे, सभ कोइ पू-भर जाइ छै
संगी संग हमहूँ जेबै।
गामक दशा देखते छीही
ऐठाम रहने की खेबै?

बौआ हौ, हम की कहबह
धीगर-पुतगर तोहूँ भेलह।
सुख-दुख तँ देखते छहक
आब की कोनो नेना छह।
एकटा बात बता दए
करए जेबहक कोन काज?
से काज तँ एतै जगेबह
किअए जेबह आन राज।

भ्रम-जालमे सभ फँसल, माए
के केकरासँ कम जनैत।
धन छोड़ि धनवान बनल सभ
अपन बात बुझबे ने करैत।

पू-भर केतए जेबह तूँ
से कनीए हमरो कहि दाए।
मन हएत तँ पत्रो पठेबह
नाओं-ठेकान दिहऽ पठाए।


उन्नति

मेटत केना गरीबी यौ भैया
मेटत केना...।

धन-धान्य नुकाएल माटिमे
नुकाएल छै हीरा-मोती
निकालैक बुधिए बिझाएल
केना कऽ पाएब ज्योति
कानक बिनु सोन होइत जहिना
तहिना ने माटिओ छै।
ने छै श्रम आ ने समचा छै
तखनि केहेन फल भेटत यौ भैया,
मेटत केना...।

मन पतियाबए, औजार बनल छै
नहरो खुनाएल कोसीमे।
होइए की सभ देखते छिऐ
आशाक आश लगत कथीमे।
खादक बदला माटि भेटै छै
बोरिंगक पाइप सेहो नकली छै।
पम्पींग सेटक कथे की
तीन बेर साले सिसकै छै।
अहीं कहू, केना हएत यौ भैया...
मेटत केना...।

खेतक बिनु आकार देखने

फसिलक केना पहचान करब?
उपजल दाही जखने हेतै
अनेरे कोठीक जोगार करब।
विज्ञान बहुत आगू बढ़ल छै
मुदा, एकभग्गू बनल छै।
करबारीक नोर नै आँखि
लोकनियाकँ नोर बहै छै।
घासे बीखाह उपजि खेतमे
कोन मनसूबे दुहबै गैया, यौ भैया
मेटत केना...।

ललो-चपोसँ काज नै चलतै
इमनदारीक डेग उठबए पड़तै।
से जाबे धरि नै उठतै
हक्कन कनिते रहबै यौ भैया,
मेटत केना...।



चौरीक धनकटनी

नभम्वर-दिसम्वरक शीत ओस
पाबि जनवरी गेल पलाए।
दसतारक सेहो चलैत
तरे-तर जाड़ गेल जुआए।
ऊपर खेतक धान कटि-कटि
गहुमक बागु चलए लगल।

नार-पात समटैसँ लऽ कऽ
दौन-दोगौन हुअ लगल।
राति-दिनक सीमा तोड़ि
जी-जानसँ सभ भीड़ल।
जेते-काम तेते दाम
हँसी-खुशी भेटए लगल।
गहुमो बागु भेल,
धानो दौन भेल,
टालक पेनी सेहो छनल।
टीनक मुँह काटि-काटि
उसनियाक बरतन बनल।
एक्के धान उसनलापर
उसना-अरबाक खाढ़ बनैत।
चौरीक कटनी पछुआएले अछि।
अधखिज्जू खेत बाँकीए अछि।
सी-सी सिहकी पछबा धेलक
पूर्वो भांज पुरए लगल।
सुगम-सगुण पाबि-पाबि

शीतलहर चलए लगल।
अकाससँ पताल धरि
कोने-सान्हिए ठंढ़ पकड़लक।
ठरल पानि ठाढ़ भऽ तपस्वी
सीस धानक हिआबए लगल।
एक तँ सिल्लीक चाभल,
दोसर पानि अकुराएल।
सड़ि-सड़ि सिस घार खसौने
पानिक तर सेहो नुकाएल।
पड़ल छगुन्ता ठाढ़ तपस्वी
हँसुआ नेने पानिमे ठाढ़।
छोड़ि देब कायरता होएत
लगले केना मानि लेब हारि।
जाबे प्राण बँचल अछि
ताबे केना पीठ देखाएब।
थोड़-थोड़ आश पकड़ि
आशावान जरूर कहाएब।



किसान

अपन दुख-दरद भाय
जाधरि अपने नै बूझब।
ता धरि केना पाबि सकै छी
नीक भविष्यक नीक सोचब।
निच्चाँ-ऊपर सभ बजैए
किसानेक देश भारत छी
कटि-मरि किसाने सभ
अंग्रेजोकेँ भगौने छी।
जरि-उजरि केते गाम
केते लोक प्राण चढ़ौलक
पैंसठि बर्खक आजादी की
पेटोक दुख मेटोलक।
जहिना आजादीसँ पहिने
चुसलक खून राजा-रजवार।
तहिना तँ आइओ होइए
चुसैए देशी-विदेशी करखन्नादार।

चिड़ै सभ जहिना गाछक ऊपर
खोंता बनबैए अपने लोले।
तहिना ने अपनो भऽ सकत
लुइर-बुइध अपने बोले।
निर्णायक दौग आबि रहल,
अछि निर्णायक मोड़।
मोड़ मोड़ि घुमाएब नै जाधरि
पाएब केना थोड़ो-थोड़।

स्वतंत्र देशक स्वतंत्र जन
गहि एकरा धड़ए पड़त।
यएह छी सोचै-विचारैक
जीबैले लड़ए पड़त।

❍

टुटैत जिनगी

टुटैत जिनगीक बेथा
घूमि पाछू देखए पड़त।
सैयौ नै हजारो बर्ख नै
जड़िएसँ देखए पड़त।
पाँच हजार बर्खक पुराण
हँसि-हँसि बाजि रहल अछि।
सुर-असुर, दानव-देवताक
ऐतिहासिक गाथा सुना रहल अछि।

लगभग पौने दू सए बर्ख पहिने
अंग्रेज आबि आसन जमौलक।
जकरा भगिते ऐठामक
जन-गण आजादीक साँस लेलक।
मुदा एतबे नै, कने आगू चलू।
हजार बर्ख की कहैए।
चारू दिस भजारि-भजारि, तेकरा
पुछियौ विवेकसँ निर्णए की करैए।
स्वर्णिम इतिहासक स्वर्णकाल
ओझुके भारत छल तहियो।
निचोड़ि-निचोड़ि, तर्क-वितर्क
निर्णए निरमाबए पड़त आइओ।



कविता

नव पथक अनुकूल पथिककेँ
सही सवारी सुपथ-पथ चाही।
तहिना खुशी खुदखुदबए-ले
मुस्की सजल शब्द कविता चाही।
उपयोगी नव-नव वस्तुक
जोड़ि-जाड़ि छिहलैत डगर चाही।
हराएल रसिक प्रेमी-ले
बेराएल भाव कविता चाही।
बेराएल भाव तहिए सजैत
जहिए भेटैत छिड़ियाएल भंडार।
चुनि-चुनि चुनिया चुनैबिते
नुकाएल पबैत शब्द-सार।

गढ़ैत सदति चमचमाइत शब्द
सिरजए अलंकार ओ छंद।
चाहे केतबो केहनो हवा सिहकै
चलिते रहैत मुस्काइत मन्द।
मन्थर गतिए चलि मोहनि
परखए सदए दुध ओ पानि।
सिर ऊपर आकि नीच-मध्य
देखि पकड़ि सम्हारि-वाणि।



बुड़िबकी

धरिया धारण केने माए
जाइ छेलौं स्कूल बाट।
बाटेमे रोकि काका
बुड़िबक कहि लगौलनि टाट।
बौआ, तोहर काका दिअर हेता
ओ देखलनि संग मोर।
हमरा देखि तोरा कहलखुन
दुखी नै हुअ थोड़ो-थोड़।
काकाकेँ छोड़ि दइ छियनि, माए
तोंही तँ फडिया दे?
चुट्टी धारी सदृश
केना चलब सेहो सुढ़िया दे?
बुड़िबकक माने अनेक,
एक तोहर एक माए-बापक
तोहर जे छिअ, कहै छिअ
कान पकड़िहऽ थोड़बो-थोड़।

एके काज दोहरी-तेहरी
जेहेन जे से तेहेन करैए।
हल्लुक भऽ जेकर होइ छै
काबिल ओ कहबैए।
बुड़िबक बूझि सवाल केलियौ
से कहाँ बुझौलेँ माए?
सरकारी घर ऑफिसमे
अपराधक दफा बनल छै।

मुदा बाँकी निरपराधी लेल...?



भुताहि गाछी

बीआ उगि अँकुरि-अँकुरि
बढ़ैत बनि बनल गाछ
पुरुष संग पौरुष पाबि
बनौल जिनगीक आस।

सोन्हि सिर सन्हिया धरतीमे
उठा पएर सुन-सान अकास
संगी सजि चलि दुओ संगे
बैस गेल धरती ओ अकास।

डेगे-डेगे डगर निरमा
नै छै जेकर ओर-छोर
तृप्त चित्त बैस सरोवर
मढ़ै-गढ़ै छै साँझ-भोर।

घाट पहुँच देखि तुलसी
अनन्त सरोवर झील
उमरि-घुमरि गाबए वसन्त
हुलसि-हुलसि भऽ तुलि।

अश्रु ओस सजि अनन्त कमल
लगबए भोम्हरा छाती
विष-अमृतक सेज सजा
प्रेम पसारि दिन-राति।

बाँसक घर देखि भोम्हरा
भोम्हरि बनौल माटि मुसरी
ढहि डगर हुच्ची बनिते
संग नाचए लगल टुसरी।

अपन सुख सिरजैले
उजाड़ि-उजाड़ि दोसरकेँ
वंश उजाड़न भेल बनौनिहार
क्षण-पल मेटबए दोसराकेँ।

हुच्ची खसि हिआ हारि
लगल तियागए जान-परान
एका-एकी मेटए लागल
हँसैत-खेलैत खनदान।

पावसक परसाद पाबए
हँसि-हँसि आबए भूत
पाबि परसाद पौरुख जगिते
बनि बदलि यमदूत।

सभ मिलि यमदूत निरमा
जओ-तिल चढ़बए यमराज
साटि-साटि सहे-सहे
नैयायिक बनौल धर्मराज।

अकास-पतालक बीच रचि
जिनगी-मृत्युक संसार
स्वर्ग-नरकक बीच बाँटि

लीला शुरू भेल अपरम्पार।

नि:सहाय निरीह धरतीकेँ
बनौल भोगक चास
तामि-कोड़ि परती-पराँत
ऊँचगर बनौल डीह-बास।

जामुन चढ़ि यमदूत हँसए
बना बास देवी फुलवाड़ी
जीन पसरि धरती चुमए
भूत लपकि बीट बँसवाड़ी।

देखि दशा गाछी-बिरछीक
लगौनिहार भऽ गेल बताह
होइबला कहाँ होइ छै
कानि-कुहरि भरए आह।

अबोध कुहरि बोध कुहरि
कुहरि भरए आहि
सिहरि-सिहरि सिसकए विवेक
बनि गेल गाछी भुताहि।

भूतक डर केकरा ने होइ छै
बूढ़ हुअ आकि जुआन
मुदा भूत तँ भूते छी
जिन्दा रखैत सदति धियान।

(श्री नागेन्द्र कुमार झा आ श्रीमती नीतू कुमारी लेल..)
❍

वोनक आगि

गाछ-बिरीछक रग्गड़सँ
लुत्ती छिटकै छै वनमे।
सूखल पात ठहुरी पकड़ि
पसरै छै सघन वनमे।
धधड़ा धधकैसँ पहिने
करिया धुआँ पसरे छै।
लगैत आँखि अश्रु करुआइते
जीव-जन्तु पड़ाइ छै।
आगिक डर केकरा ने होइ छै
चाहे बाघ हुए कि हाथी

मुदा,
धीरजसँ जे सहति...
सएह कहै छी यौ भाय साथी।

❍

बितल बर्खक विदाइ

अंतिम सत्कार सुनू शिकारी
अंतिम दिन कहै छी।
अंतिम बात सुना-सुना
अंतिम सत्कार करै छी।

हँसैत रहू सदति अहाँ
हमरो तँ जीबए दिअ।
सभ किछु तँ लैए लेलौं
एतबो तँ बाजए दिअ।

नोर पीबि हृदए अहाँक
शीतल सदति रहैए।
मनक ताप झहड़ि-झहड़ि
सगतरि तँ कहैए...।

❍

संगी

संगे-संगे एलौं
संगिया मरि गेल
हम भुतिआइ छी।

संगे अबैत मिलि
ठेंसिया गेलौं बाट
संगिया छूटि गेल।
हम भुतिआइ छी।

अचेत भऽ पूब मुहेँ
पथराएल नयन निष्प्राण
बाटे लसिया गेल।
हम भुतिआइ छी।

आगू-सँ-पाछू
नोचि खाइले प्राण
मर्ड़ाइत रहैए।
कोइ भुतिया बना बाट
तँ कोइ बहटि-बहटि
पेटे विलाइए।
हम भुतिआइ छी।

कोइ खुनि निरमा
नव बाट-घाट
तँ कोइ घाटे बौआइए।

हम भुतिआइ छी।

पिछड़ि-पिछड़ि खसि-खसि
लतखुर्दन बनल छी
चारू कात घूमि-घूमि
टुक-टुक देखै छी
चौदहो भुवनक बाट
चलैत चौदहो दिस
कोन बाट पकड़ि
देखब चौदहो दिस।
संगिया मरि गेल
हम भुतिआइ छी।

❍

बेथा

पूछत के केकरा यौ भाय
अपने बेथे सभ बेथाएल।
घसा-घसा चानी बनि टलहा
चीन-पहचीन सभ हराएल।
कोन कष्ट किनका पकड़ने
देखिनिहारो बौआएल छथि।

रंग-बिरंगी चश्म दृष्टि
मने-मने हराएल छथि।
दिअ पड़त दृष्टि धरती
तीन-दिशा तीनू चलए।
आत्मिक भौतिक ओ देवी
जगह पाबि तीनू खेलए।
एक खेले तन-मन केर भीतर
दोसर करए तेज परहार
तेसर तीनू बाट घेरने
रोकि-रोकि बिलहए उपहार।
तत्व कहैत मुँह खोलि-खोलि
तीनूक तीनू छी तकरार।
खोलि आँखि अगात देखि
फुलाएत अभिमन्यु भकरार।

कहाँ अछि कठिन बाट जिनगीक
चिक्कन चालि चलैत चलू।
जिनगी तँ पानिक बुलबुल्ला

परेखि-परेखि छाती धरू।


धब्बा

रंग-रंगक धबैत धब्बा
दोस्ती कऽ संग धेलक।
उकनि सिर चढ़ा गाछ
रीति-नीति सब गमौलक।
सुखि पात पतझड़ पाबि
पथार पसरि धरतीपर।
नग्न बेनग्न बनि वृक्ष
नोर ढड़कए करनीपर।
दर्शनक सभ महिमा गाबए
जहिना देश तहिना विदेश।
दिशा विहीन भऽ भऽ
कोन गीत गौत सु-देश।

धन जीवन आकि जीवन धन
पैसि गंगा देखए पड़त।
अपना-ले अपने आँखिए
गंगाजल पीबए पड़त।
बिदुषी आकि ऋृषिका बनि
पुरबा पीबि फुफुआएब।
धुन गुणक संग नाचि
नर्तक बनि ठिठियाएब।
मति-विमति पबिते पाबि
दिशांसक खुमारि चढ़ैत।
ढड़कि-ढड़कि ढाल ढल
हँसि-हँसि वसन्त गबैत।



पितृपक्षक भोज

अमावास्या आसिन केर
बितते भोजक लगल ढबाहि।
आन-आन ओरियानक संग
महाजनी चाउरक लगैत सवाइ।
गाम-गामक महाजनोक
रंग-बिरंगक हुकुम चलैत।
केतौ सवाइ तँ केतौ
डेरही, पौन-दोबर चलैत।
जेकर लाठी तेकर भैंस
खाली ई खिस्से नै छी।
पइस नहाएब जखनि पोखरि
तखनि बूझब अपने ने किछु छी।

मुदा गुन भेल, भाय हमरा
जाति-जातिक रग्गड़ मचल।
काटि-छाँटि एकबाहि केलक
मनमे खुशीक तूफान मचल।
जातिओ तँ जातिए छी
दिन-राति रग्गड़ करैत।
समए पाबि जहिना सिंगरहार
खुशी-खुशी अपने झड़ैत।
गाममे जाति असकर
असकर अछि दियादी।
बिनु भोजे उद्धार सभ कियो
बाबा, काका, भैया आदि।



ठनका

कहाँ बूझि पेलौं अखनि धरि
तड़कैत ठनकाक मिरगी।
आगि-पानि दुनूक बीच
पकड़ि-पकड़ि चाभि जिनगी।
सच्चे कहल जाए यौ भैया
हाथ चढ़ा सिर पकरू।
साहोर-साहोरक, स-हरि स-हरि
धुन दिए
कहाँ छै ठनका उकरू।
गुलाबी गाढ़ लाल देखि
लग खसैक ठनकाक आगम।
आँखि-कान आबो बचाउ
नै तँ बाट भेटत दुर्गम।

खाली-खाली अकासमे
एहेन ठनका बनै केतए?
अनचोकेमे उठिते उठि
एते शक्ति अनै केतए?
गैस-तरल, तरल गैस
आँखि मिचौनी खेल करैए।
उड़ि-उड़ि अकास चढ़ि
आगिक अंगोर बनैए।

वएह अंगोराक शक्ति पाबि
उसरन-बिसरन दुनू बनैए।
सूतल मन आशा जगाउ
पानि-पाथरक बचाव बनाउ
सोलह कला सजल अहाँ
जिन्दादिलीक वसन्त गाउ।
मंजिल दूर कोनो नै छै,
दुनियाँक नक्शा बनल छै।
चीन्ह-पहचीन्ह बाट ताकि
नापल डेग गनल छै।
बनि बटोही बाट घरू
भरल-पूरल संसार छै।
रस्ते-पेरे बटखरचा भेटतै
संगबेक भरमार छै।



झपासा

पहिले-पहिल जिनगीमे
गिरहकट भाइक बुझलौं झपासा।
एहेन मुँहचुरू बनब
मनमे नै उठल तेहेन आशा।
सभ दिन सुधबा-बुधबा रहलौं
छल-प्रपंचक भाँज नै बुझलौं।
बाबू वचनक निमर्जना,
निश्चल मने करैत एलौं।
मुहसँ कहियो गारि नै निकलल
फलो नीके भेटैत रहल।
ओना सुनने छेलौं गिरहकटक
बाबूक, मेलाक बात मन पड़ल।

गिरहकट भाइक चालि सभ बुझैए
हमहींटा बिनु बूझल छेलौं।
नै बूझि पेलौं हुनक झपासा
ओंघरा-पोंघरा खाधिमे खसलौं।
बेटा मूड़नमे अगुआ कऽ
नौत-हकार दिअए पठौल।
किरदानी तेहेन ने केलनि
अगुआक अगुआइ फल पौल।
अहूँकेँ कहै छी भाय
झपासासँ सात लग्गा हटल रहब।
गिरहकट सबहक बातसँ
सदति अपनाकेँ बँचबैत रहब।



शिवचरन

सोलह साल पोहुलका शिवचरना
शिवचरन बनि बिरजैए।
जे कहियो गामक मैल छलए
होशगर किसान कहबैए।
भूमकमक किछुए बर्ख बीता
शिवचरना छोड़लक गाम अपन।
कियो कहए छोड़लक, कियो छोड़ौलक,
नै बजैए कथा अपन।
खसैत-खसैत, खसैत शिवचरना
गामक पतित कहबए लगल।
छाती जखनि काज नै केलकै
गाम छोड़ि, नेपालक बाट धेलक।

आन देश आन मुलूकमे
बिनु जगजगार लोक मनुखे रहैत।
लूरि-मुँह जेहेन रहए छै
तेहने शक्लक बाट धरैत।
विराटनगरसँ कोस भरि उत्तर
एक गिरहस्त ऐठाम पहुँचल शिवचरना।
तरकारीक खेतीक नक्शा बना
बीघा भरि खेत लेलक भरना।
घराड़ीक पाइ रहबे करै
खेतेमे चापाकल धसौलक।
दु-परानीक खोपड़ी बना
मेहनतक आसन जमौलक।

साल भरि बाद नोकर रखलक
मेहनतसँ खेतो दोहरौलक।
साले-साल उठैत-उठैत
गिरहस्त अपनाकेँ पौलक।
मनमे उठलै देस-कोस,
गाम-घर ओ सर-समाज।
बेचि-बिकीन सभ किछु नेपालक
आबि गेल अपना समाज।
संजोगो नीक भेटलै
दस बीघाक एक पार्टी भेटलै।
एकेठाम दसो बीघा कीनि
घर-घराड़ी सभ किछु भेटलै।



चौठचन्द्रक छाँछी

चलैत चाक देखि कुम्हनि
तिरछिया तीर छोड़लनि तानि।
कोन लोभ लटकल अहाँ छी
जहिना बगुला, पाछू दौगैत जानि।
प्रीतम प्रीत पाबि कुम्हार
बिहुँसि बाजल, छाती खोलि तानि।
सभ दिनसँ करैत रहल छी
तेकरा केना छोड़ब जानि।
भादो सन उकरू मासमे
विधाताक चाक चलबै छी।
पानि-बुन्नीक ठेकान कोनो ने
अनेरे फज्झति सुनबै छी।

जे फज्झति करए अहाँकेँ
तेकरा पुछब अपन किरदानी।
लोहा-लक्कड़क दूध पौर-पौर
गाए-महिंसक करैत बदनामी।
छोड़ि दिअ सभ गर-गिरहत
बेशर्म सभ बनल जाइए।
देवीओ-देवताकेँ ठकि-फुसिया
छाती तानि-तानि चलैए।



भरदुतिया

आइए ने भरदुतिया छी माए
पिरही कखनी धुअए जाएब।
साल भरि माटिक लेढ़ाएल
चिक्कन धोय कखनी सजाएब।

बिनु सुखने लिखिया केना हेतै
बिनु लिखिए आसन केना बनतै।
भाए-बहिनक सगुनिया पावनि
बिनु निअम-निष्टे केना चलतै?

पुरनि तँ पाड़ले अछि बेटी
कटहरक रंग छै सटल।
मलि-मलि माटि धोइ दिहक
सुखिते चमचमाए लगत।

पानो-मखानक ओरियान
अखनि धरि पछुएने छी।
पावनिक ओरियान करह तूँ
अँगना घर सम्हारै छी।
बाल-बोध बूझि बनियाँ,
हमरा तँ ठकिए लेत।
पाइओ बेसी-बेसी लऽ लऽ
चीजो तँ दबके देत।
ई सभ बात सोचए कियो
भरल-पूरल पावनिमे।

राम-धाम सभ सहि
भाइक हाथ पुजैमे।



फूसि

एहनो फुसि बजै छी
जइ ढेरीपर बैसल छी
ओ कहै छी, किछु ने अछि
अकर्म-विकर्मक बात बिनु
मुँह उघारि बजै छी
एहनो फुसि बजै छी।

लेश मात्र जे अछि नै
तेकरा ढेर बुझै छी
ब्रह्मलोक, शूरलोक, देवलोकक
सदति बात बजै छी
एहनो फुसि बजै छी।

❍

चिक्कनि माटि

सभ कोइ जाइ छै माटि आनए माए
हमहूँ जाएब अनैले।
चारिमे दिन दिआरी पावनि
घर-ओसार छछाड़ैले।
अखनि ते बच्चा छैं बेटी
केना कहबौ माटि माथ उठबैले
मटिखोभा महारक ऊपर
केना कहबौ तइ चढ़ैले।

जेना-जेना सभ करतै माए
तेना-तेना हमहूँ करबै।
संगे जेबै, संगे एबै
पथिया भरि कऽ लौबै।
कहले तँ बड़ सुन्नर बेटी
नै बुझबिही माटिक किरदानी।
जे माटि चमकबै माटिकैं।
धसना खसि मारै जिनगानी।
दोसर-तेसर काज उताहुल
नै जा एहत आइ हमरा।
संगे-संग काल्हि चलिहैं बेटी
तोरे आशा ने अछि हमरा।

❍

झारू-बाढ़नि

दसे दिन दिआरीकेँ माए
अँगना-घर कहिया करबिही।
झोल-झाल लटकल सौंसे
चार-देवाल कहिया झाड़बिही।

वएह ओरियान करै छी बेटी
सीखि ले तोरो काज देतौ।
देखिए-देखि, सीखिए सीखि
अगिला दिन काज हेतौ।
नारिकेलक छाजा चीड़ि-चीड़ि
किल्ली दऽ झारू बनाएब।
निछा-निछा राड़ी-डबहारी
मुड़ी-छोपि बाढ़नि बनाएब।
आब कि केतौ चौरकाँटु भेटै छै
बाढ़ि आबि सभटा उपटौलक।
केतौ-केतौ जौं बँचलो छै
तेकरो तँ बकरीए निघटौलक।

झारू-बाढ़नि मठौठ केना पाओत
तखनि केना झोल झड़तौ।
से जँ नै झड़लौं माए
तँ लटकि-लटकि घर खसतौ।

से तँ बेस कहलैँ बेटी
आब कि केतौ राहड़ि होइए।

जहियासँ राहड़ि उपटल
लाड़निओ बनबैले सिहन्ता होइए।
जेना-जेना समए ससरै छै
तेना-तेना ससरैत चल।
महक जेना हवा पसरै छै
तेना-तेना पसरैत चल।
बाँसक छिपाठी टोनि-टोनि
झारू-बढ़नि बान्हि देब।
दोगे-सान्हिए, कोने-कानिए
चिक्कन-चुनमुन बना देब।

❍

डगरीक डगर

ब्रह्म मुहूर्त भोरहरबामे
डगरीक डगर बजल भरि गाम।
जइहऽ दरिदरा अबिहऽ लक्ष्मी
मंत्र पजड़ल मनक धाम।
सूप बजौने ऊँट भगै छै
नानी-नाना कहने छथि।
सबुरे गाछ मेवा फड़ै बेटी
झुनकुटही दादी कहने छथि।
सबुरक गाछ केहेन छै माए
कनी-मनी हमरो देखा दे।
किअए वोन-झाड़ लगाएब
फुलवाड़ीक लूरि बता दे।

अखनि अहाँ बाल-बोध छी
फूलक गुण-अवगुण सीखू।
गुणे-अवगुन फूलक गुण छै
बुझै-लगबैक लूरि सीखू।
सबुर शब्देटा सँ नै होइ छै
विशाल-वृक्ष सेहो होइ छै।
रंग-रंगक फूल-फड़ संग
मेवोक फल लगै छै।



चपरासी भाय

पाबि पद चपरासी केर
खुशी हँसी बनि उठल परिवार।
धरती छोड़ि अकास छिटकए
सुर्ज-चान संग करत वास।
आइ धड़ि खिलचल घर
समाजक विलटल परिवार
बसैत मनुख मनुखेक संग
चाहे जेहेन हो परिवार।

ओसारेक एस्टुलपर
भेटलनि काज भाय चपरासी
पद गढ़ि अंग ऑफिसक
रूप सजौलनि दरवाजिक।
नाचि मन गाबए लगलनि
खिखिया ताल देखबए लगलनि
आँखि मारि इशारा करैत
सुर-ताल झुमए लगलनि।
रोब कहाँ रूआब कहाँ
गनल दिन पदक छी।
लेखा-जोखा सबहक होइ छै
नीचाँ-ऊपर चाहे कुरसी।
निचला कुरसी कखनो कूदि
तोड़ि-फाड़ि धरतीपर पटकए
बतिया उपरका चीड़ि-चाड़ि
दोख मढ़ि-मढ़ि फँसरी लगबए।



नोत

भोरे आबि लालभाय देलनि
नोत कोजगराक घरजाना।
नाओं कहि फुटा कऽ कहलनि
नै भेल बाबू मन-माना।
परिवार तँ परिवार होइ छै
फुटा नोत देब अनुचित।
बिनु विचार केने ता धरि
केना कहब एकरा उचित।
बेस पुछलह बौआ तूँ
तँए तोरा कहै छिअह।
वृद्धापेंशन दरखासक तारीक
दुनू केना निमाहब आइ।
तखनि कि करबै बाबू
रस्ता तँ अहीं देखाएब?
केते महत केकर छै
छी कोन बड़ भारी खाएब।
एकजना बना परिवारमे
धुरीकेँ नेने पकड़ि।
पेट भरि खाइ खातिर
डारि-पात दइए छकड़ि।

ततबे नै बौआ, आरो सुनह
बाल-बोध घरक भेलह।
तोरा छोड़ि खाएब उचित
तोरो तँ जाइले केना कहबह।

जखनि अहाँकँ नोत पड़त
खतियान सेहो बनबै करत।
खतियाने ने खत्ती दऽ दऽ
आड़ि-धूर बनबैत रहैत।

कहलह तँ बेस बौआ,
मुदा तोहूँ बन्हले छह।
ने उपनैन भेलह बिआह
तोहर कोन मदिए छह।

❍

लटुआ

लहैकते आगि मनमे
लटुआ-लटुआ लटए लगैत।
देखि, आशाक अवरूद्ध बाट
मुरझि-मुरझि टगए लगैत।
रंग-बिरंगक आगि पजरि
पकड़ि मन झरकाबए लगैत।
तड़पि-तड़पि, छटपटा-छटपटा
धरती फाड़ि निकलए लगैत।
पटुहा भेल नगर (गाम) देखि
बिलगा-बिलगा गुनए लगैत।

कियो पीड़ित अन्न-वस्त्र बिनु
कियो अवासक आस लगबैत
कियो मनुखक जिनगी पाबए
ज्योति पबैले कियो मुँह बबैत।
हरा गेल आकि पड़ा गेल
बुझा दिअ हमरो यौ भाय
लुटा गेल आकि छीना गेल
सेहो कनी दिअ बुझाए
सभ चाहए सुखसँ जीअब
माएक सजौल आंगनमे।
बेचैनीसँ चैन नै पाबए
लेत साँस निचेन आँगनमे।

कहियो बल, कहियो सुसकारी

आइ धरिक इतिहास कहै छै।
एकैसम सदीक मशीनी मनुख
तेकरा-ले की सभ कहै छै।

❍

एकैसम सदीक देश

पैघ आकांक्षाक सदी एकैसमी
उत्तरार्द्ध बीसमीए छूलक मन।
नव-नव तकनीकक बले
सुख-समृद्धिक, भरलक मन।

रंग-बिरंगक रूप सजल छै
दुनियाँक आजुक रंग
आगू भऽ कोनो दौग रहल छै
कोनो पाछू रगड़ैत मन।
पहाड़-पहाड़ी, पठार बीच
नदी-पोखरि, झील जहिना।
गढ़ल-बनल देश अपन
आदिवासीसँ उद्योगपति तहिना।

कियो कलकलाइत पेट अन्न-ले।
तँ कियो ललाइत रैन-बास-ले।
कियो भनभनाइत स्वस्थ शरीर-ले।
कियो चिचिआइत मुँह बोल-ले।
चित्र-विचित्र बनल देश छै
देखि सुनि, बूझि विचार करू।
सोचि-सोचि, विचारि-विचारि
एक रंगा तसवीर सजू।
एक दिस सिक्किम, मिजोरम
मणिपुर ओ नागालैंड।
लेह-लद्दाक टपिते टपैत

कनैत-कुहरैत जेसलमेर।
समुद्र ऊपर मुम्बै हँसै छै
भोगक भंडार बनल छै।
पाबि-पाबि हिलकोर समुद्रक
स्वर्गक संसार बनल छै।
उठैत प्रश्न अछि एतए?
मुम्बैए, महान भारत छिऐ
आकि अरूणाचल, झारखंडो
भारते छिऐ, भारते छिऐ।
आगू देखैसँ पहिने
उनटि पाछुओ देखए पड़त।
जेकरा कलपलदार बुझै छी
संहारक बनि चलैत रहत।
एकैसम सदी पहुँचलोपर
नर-संहार एहेन केना?
की एहने सुख-समृद्धिक सपना?
मुर्दघटी बनल, आवास केना?
जएह सर्जक बनि ठाढ़ होइए
वएह विध्वंसक बनि पड़ैए।
सुख-समृद्धिक रंगमंचपर
दरिद्रा-दुख नाच करैए।
जेकरा बले नाच करब
बामा-दहिना भौक माड़ैए
आँखि-मिचौनी खेल पसारि
अपन पीठ अपने ठोकैए।



मधुमाछी

पुष्प रस पीबि मधुमाछी
मधुर चालि चलए मधुमास।
मोहि-मोहि रस बना मधु
बिलहए उपकारक आश।

माछी रहितो तान मारि-मारि
गबैत जिनगीक गीत।
वायु सदृश गंध पसारि
बनैत सबहक हीत।

डंक रहितो डंकिनी नै
जोगा मधु मधुरानी।
सबहक सिनेह पाबि राति-दिन
महतानि बनि कहबए रानी।

महलक बीच संग-संग
बाँटि काज चलबए दरबार।
जे जेहेन से तेहेन करि
पबैत स-मान परिवार।

उपैत धन जोगा-जोगा
महल बीच सजबए रानी।
सबहक सभ छी सभ छी एक
मुस्की दऽ-दऽ सुनबए रानी।

किये उपैत, करैत किये रच्छा
किये पसारए परिवार।
एक सूत्र संचालित भऽ
हँसैत-बजैत बार-बार।

अजगुत मोहनि छाती सजा
सिरजति नाजुक परिवार।
हराएल-ढराएल बाजि-बाजि
नित सजबए राज-दरबार।

तियाग-तपस्या समेत बीछि
जोगबए मान-सम्मान।
जे लेलौं से देने जाइ छी
नै कहब किये बेइमान।

की लए एलौं की लऽ जाएब
जानए जागल नैनि।
घर नै सजने बनबै केना
सजल घरक गिरथानि?

आबो सुनू, सुनू आबो
छाती फाड़ि कहै छी।
अपने केलहा छी अधिकारी
सदएसँ सुनै छी।

पौरुष पाबि पूजू विवेक
लाज जेकर जेबर छी।
डेगे-डेग सम बना चालि

दिन-राति सजबै छी।

जे जे छी से सएह छी
परखू अपन-अपन सीमा।
केकरो मनमे ई नै उठए
भसिया गेल बालुक सीमा।

कालक टुकड़ी सभकें भेटल
अपन-अपन छी रक्षक।
कलंकक मोटरी बान्हि जुनि
हँसाउ नाओं बनि भक्षक।

देव केतए दानव अछि केतए
दुनियाँक सभ लीला छी।
बेमत भऽ इन्द्रिय घोड़ा
दानव देव बनै छी।

(श्री गजेन्द्र ठाकुर आ श्रीमती प्रीति ठाकुर लेल..)



जुआनी

समए संग चढ़ैत जवानी
सूति-जागि चलैत अछि।
नट-नटीक रंगमंच गढ़ि
घर-अँगना नचैत अछि।

चैत चित्त चढ़िते चढ़ैत
योग-वियोग बीच मर्ड़ाइत।
लहलहाइत, फन-फन फनैत
दन-दन-दनाइत तड़पैत।
कात-करोट देखि-देखि
सोलहो श्रृंगार सजबैत।
योगी-वियोगी बनि-बनि
राग-तान, सुर मिलबैत।
हपैत हवा थर्ड़ाएल ज्योति बीच
वेदनक वाणसँ बेथित
तन्नुक तन अधखिल्लू मन
टुकड़ी-पुरजा भऽ उड़ैत।
शीतल समीर सिहरैत सज्जा
कलपि कलसि कोमल कली
हँसि-कानि झर-झर झहरि
नयन-नीर कोमल डली।
कड़कि जुआनी झड़कि-झड़कि
हिअबए राह जिनगी केर
बैंकिंग बालु बना-बना
खिल पकड़ि फेक साधि केर।



तरंग

सभतरि जगबए प्रेम एकचित्त
दोसर सदति विवाद करए
एम्हर-ओम्हर छोड़ि-छाड़ि
बीचका बाट पकड़ि रहए।
रंग-रूप, चेहरा अनेक
चेतन-चित्त तँ एक रहैत।
मुदा वृत्तिक किरदानीसँ
सदिखन तँ उगैत-डुमैत।
सत् बनि कखनो राज-बिराजए
रज बनि-बनि शासन करए
धरिते धारण तम तम-तमा
झहरि-झहरि फुनगीसँ गिरए।
खेलक खेल काल सिरजैए
अपनो तँ खेले बनैए
कहाँ रखि पाबए दिन-राति
गतिएकँ मतिओ बदलैए।
सृष्टिक तँ खेले विचित्र
सुख-दुख संग दिन-राति चलए
खेलए जेहेन खेल खेलाड़ी
ओहने ओ खेलौना पाबए।
कोनो खेल धरती बीच खेलए
खेलए कोनो सतरंगी अकास
कोनो सत् सागर खेलए
चुटकी बजा-बजा रनबास।
विवेकसँ पुछए जखनि चित्त

थिसिस एन्टीथिसिसक बीच पड़ए
सिनथिसिस तँ सिनथिसिस छी
अ, उ, मक विचार करए।

❍

ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं

ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं
हरे जोतितौं, कोदारिए पाड़ितौं।
रिकशे चलैबतौं, ठेले ठेलतौं
उपहासक पात्रो तँ नहियेँ बनितौं।
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।
कियो कहए भुसकौलहा हमरा
कियो कहैत चोरि पास।
कियो कहैत किनुआ डिग्री छी
चारू दिस होइए उपहास।
धौना खसा तँ नहियेँ चलितौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।
नै पढ़ने नहियेँ होइतए
पढ़ुआ कनियासँ बिआह।
नै जोड़ए पड़ैत खर्च सिनेमाक
नै जोड़ए पड़ैत साजो श्रृंगार
सीना तानि गामोमे चलितौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।
केतएसँ पुराएब खर्च बच्चाकेँ
केतएसँ आनब कनभेंट खर्च।
केतएसँ पुराएब इंग्लीस ड्रेस
केतएसँ आनब आवासीय खर्च।
भाग-भरोसे जे ठेलि पइतौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं
कोठीक नोकरी कोठिए करितौं
चोरा-नुका कऽ खुब कमैतौं।

अंग्रेजीआ फैशनमे सजि-धजि
बम्बैया हीरो कहैबतौं
ऐ पढ़बसँ मुरखे रहितौं।

❍

नंगरकट घोड़ा

यज्ञ सजल यज्ञभूमि
पहुँचल रंग-बिरंगक घोड़।
जेहने रंग पानिओ तेहने
एक-दोसर बीच केलक होड़।

हिनहिना-हिनहिना सभ डाकए
जीतब बाजी ऐ भूमिक।
बनि तीन अगुआ-अगुआ
लीअ भजारि ऐ शक्तिक।
फटकि फटकारि एक-दोसरकेँ
मुँह मारि निकालू बात।
अनसोहांत जखने झमकब
धक्का दऽ, कऽ देब कात।
फूसि बजैक अभ्यास पूर्वा
सभ दिन सिखलक गर लगा।
बेर पाबि बिहुँसि बाजल
अछि चढ़ल खुमारि निशाँ।
शीतल सिहकी सजि सिहकए
जुनि अलिसा करू विश्राम।
चलए दियौ मिलि दुनूक संग
बहए दियौ देहक सभ घाम।
नै बुझलक सूतल आकि जागल
गमा चुकल पहिने दुनू सींग।
ठूठ नांगरि ठिठुरए लगलै
सुआस पाबि भेल तल्लीन।

सीमा-सरहदकेँ बिनु बुझने
तड़कि-तड़कि तड़कए लगल।
बेहोश भऽ जखने खसल
नंगरकट्टा कहबए लगल।

❍

गीत-२

मुहसँ बोल कन्ना कऽ फुटतै
दरदसँ दुखाइ छै
टीससँ टिसकै छै छाती
लहि-लहि लटुआएल छै
मुहसँ बोल कन्ना...।

आशाक सभ आशा मेटलै
बाटे सभ धेराएल छै
केकरो कहने किछु ने भेटत
अपने बेथे बेथाएल छै
मुहसँ बोल कन्ना...।

चोटसँ चोटाएल छै मन
ढहि-ढहि कऽ ढनमनाइ छै
तैयो हँसि-हँसि नाचए-गाबए
राति-दिन बड़बड़ाइ छै
मुहसँ बोल कन्ना...।



फुलबतिया

फूल देखि फुलाइत जेना
मालिक दल-दल फुलवाड़ी
तहिना देखि फुलबतिया
जुड़ाइत पिताक बखारी।

आशा आस उगा अंकुड़ा
सुरकुनियाँ दऽ दिन-राति चलए
फड़ देखि देखि जिनगी
सुख-संतोष सहजि धरए।

करए समर्पण फूल जहिना
प्रेमी जिनगीक बाट
देखि प्रेमिक प्रेम तहिना
बिहुँसए सदए सरोवर घाट।

प्रेमी प्रेमिकाक बीच सदए
जीवन धार बहै छै
चान सूर्ज बीच सदए
क्षण-पल संग चलै छै।

तपल जिनगीक तापसँ
तियाग उछलि कुदैत
दुनियाँक रंगमंचपर
लीला सदि देखबैत।
❍

करैलाक फूल

दिन भरि बैशाख जेठक
अगियाएल रौद जरि करैलाक कोढ़ी।
कोनो फड़ ऊपर, कोनो बिनु फड़े
डुमैत किरिण होइत भकरार कोढ़ी।

पीड़ासँ पीड़ित भऽ भऽ
पीअर वस्त्र पहीरि चमकए।
सी-सी सिहकीक संग पाबि
मुस्की दऽ दऽ मधु रस छिड़कए।
माटि ऊपर छिड़िया-छिड़िया
जिनगीक संघर्ष करैत।
अपन जान बचा-बचा
सुगंधक संग फड़ो पसरैत।
बिनु सेवाक जिनगीए की
जरैत-मरैत ओ जानए।
तीत सुआद हिस्सो पाबि
सेवाक गुण-धरम पहचानए।
अकास चढ़ि बिहुँसि-बिहुँसि
अगड़ाइत-मगड़ाइत बजैए।
सुनू मीत, कनी हमरो सुनू
मधुक प्रेमी लोक कहैए।



गिरहकट

घाट सिमरिया नहाए गेलौं
बूझि गेल केना गिरहकट।
पाछू बुझलौं गिरहकट छलए
आँचरक पाइ लेलक काटि।
जहिना कुसियारक गिरहपर सँ
काटै छी मीठ रसक पोर।
तहिना गिरह बान्हि गिरहकट सभ
करैत रहैत साँझ-भोर।

जेतए जाएब तेतए देखब
गिरह बान्हि-बान्हि जाल बनल।
बैसल-बैसल गिरहकट सभ
अछि सत्ता-शासन चिपकल।
जिनगीक कोनो कोण नै
गिरहकटसँ छुटल अछि।
एहेन विकट समैमे
जिनगी भार बनल अछि।
नव-नव जाल बना-बना
मकड़जाल पसारने- अछि।
दिनक-दिन, रातिक-राति
ओझरा-ओझरा कुहैत अछि।

❍

मोबाइल फोन

तीन बजे राति आएल फोन।
एकांत चढ़ तुरूछल मन।
हेमालयक आँगन वनमे
पतखर्रनी एक खड़ैंत पात
एक कोमल एक खड़खड़ देखि
मन-विवेकक भेल मतैक्य
एक्के गाछक दू पात देखि
काज उगल ओकरा मनमे
एकक आसन एकक भोजन
तखनि भरत बैभव तनमे।



पछिला गणित

आइसँ गणित पढ़ए जाइ छी
अहूँ किछु सिखा दिअ भाय।
घरसँ निकलि ने स्कूल जेबै
घरक गणित बुझा दिअ भाय।
अहाँ भैयारी नै सहोदर छी
झूठ नै बाजब अहाँसँ
गणित तँ हमहूँ पढ़ने छी
लाभ केते हएत हमरासँ।

धूर-कट्ठा, बीघा पढ़ने छी
पढ़ने छी सेर-पसेरी।
कनमा-पौआ, बोरा पढ़ने
चौअन्नी-अठन्नी आ भरी।
आब कहाँ चरचा चलै छै
ऐ सभ हिसाबक भाय।
तखनि केना मेल बैसत
बुझा दिअ कनी हमरो भाय।

एक चलैत शहर-बजार
दोसर, गाम-देहात चलैत।
दुनूक गोरा जखनि एकठाम
बैस अपन निर्णए करत।

❍

कॉमन सेन्स

बाबूजी, कॉमन सेन्स केकरा कहै छै
फड़िया कऽ सिखा दिअ।
आइए स्कूलमे सीखलौं
परिवारोमे बुझा दिअ।

घुसकबैत मुस्की घुसका पिता
चारि मोतीकेँ आठ बनौलनि।
ने अद्दी-गुद्दी आ ने अजोह
मुस्कुराइत गुरु मुँह खोललनि।

जिज्ञासासँ मुँह उठा पुत्र
लोलक-बोल सुनए चाहलक।
जहिना लोलमे बोर पड़ै छै
तहिना अजोध शब्द उठौलक।

झपसि पिता जिज्ञासा पुत्रक
बरसौलनि शीतल अश्रुकण।
कॉमन सेन्ससँ पकड़ि
अजोधक केलनि पोस्ट-मार्टम।
एक पुत्र जनमै बीस बर्खमे
क्रमश: जनमै अन्त पचास।
की दुनूक बीच दूरिओ हेतै
अही प्रश्नमे हएब पास।

❍